सोमवार
13 जुलाई 2026
● देहरादून
● वर्ष 34
● अंक 170
● पृष्ठ 8
● मूल्य ₹ 1.00

34 साल से देहरादून का विश्वास

दून वैली मेल

सांध्य दैनिक

आर.एन.आई. : 59626/94 email: doonvalley_news@yahoo.com Website: dunvalleymail.com डीएवीपी से मान्यता प्राप्त

बद्रीनाथ मंदिर चढ़ावा चोरी मामला:

फरार कर्मचारी दून से गिरफ्तार

हमारे संवाददाता

चमोली/देहरादून। बदरीनाथ धाम में श्रद्धालुओं के चढ़ावे में कथित हेराफेरी के मामले में पुलिस को देर रात बड़ी सफलता हाथ लगी है। मामले में फरार चल रहे आरोपी कर्मचारी प्रमोद नौटियाल को पुलिस ने बीती देर रात करीब 11 बजे देहरादून नेहरू कालोनी क्षेत्र से गिरफ्तार कर लिया है। गिरफ्तारी के बाद पुलिस टीम आरोपी को पूछताछ और आगे की कानूनी कार्रवाई के लिए बदरीनाथ ले गयी है।

बता दें कि इस चर्चित मामले में पहले ही आरोपी के खिलाफ मुकदमा दर्ज किया गया था और उसकी गिरफ्तारी के लिए पुलिस लगातार संभावित ठिकानों पर दबिश दे रही थी। जांच के दौरान पुलिस ने 25 जून, 29 जून और 2 जुलाई को चढ़ावे की गणना के समय की सीसीटीवी फुटेज अपने कब्जे में लेकर जांच की। 25 जून की फुटेज खंगालने पर आरोपी कर्मचारी प्रमोद नौटियाल नोटों की गड्डी ले जाते हुए दिखाई दिया। इस महत्वपूर्ण साक्ष्य के सामने आने के बाद पुलिस ने जांच और तेज कर दी, जिसके बाद आरोपी फरार हो गया था जिसे देर रात देहरादून के नेहरू कालोनी क्षेत्र से गिरफ्तार कर लिया गया है।

विदित हो कि बदरीनाथ मंदिर में श्रद्धालुओं द्वारा चढ़ाए गए दान के रखरखाव और जमा प्रक्रिया के दौरान वित्तीय अनियमितताओं की शिकायत मिलने पर सोशल मीडिया में जब हो हल्ला मचा तो उत्तराखण्ड की राजनीतिक गलियारों में अफरा-तफरी मच गयी। मामले के तूल पकड़ने पर प्रशासन द्वारा जब इसकी जांच करायी गयी तो प्रार्रभिक जांच में चढ़ावे की राशि में कथित गड़बड़ी के संकेत मिले जिस पर संबंधित कर्मचारी प्रमोद नौटियाल के खिलाफ मुकदमा दर्ज किया गया। मामला सामने आने के बाद से ही आरोपी फरार हो गया था।

पुलिस ने बदरी-केदार मंदिर समिति (बीकेटीसी) से मामले की आंतरिक जांच रिपोर्ट, रिकॉर्ड और अन्य आवश्यक दस्तावेज अपने कब्जे में ले लिए हैं। बीते रोज जांच टीम ने बीकेटीसी के कई कर्मचारियों के बयान भी दर्ज किए। पुलिस के अनुसार, 2 जुलाई को चढ़ावे की गणना के दौरान आरोपी प्रमोद नौटियाल सहित 12 से अधिक लोग गणना कक्ष में मौजूद थे। इनमें कुछ स्थानीय साधु-संत भी शामिल थे, जो वर्षों से चढ़ावे की गणना प्रक्रिया का हिस्सा रहे हैं। पुलिस इन सभी से पूछताछ कर रही है। पुलिस अधिकारियों का कहना है कि आरोपी से पूछताछ के आधार पर यह पता लगाया जाएगा कि इस कथित हेराफेरी में और कौन-कौन लोग शामिल हो सकते हैं। इसके साथ ही वित्तीय लेनदेन, दस्तावेजों और अन्य रिकॉर्ड की भी गहन जांच की जा रही है। पुलिस ने स्पष्ट किया है कि जांच पूरी तरह निष्पक्ष और पारदर्शी तरीके से की जाएगी तथा दोषी पाए जाने वाले सभी लोगों के खिलाफ कानून के अनुसार कार्रवाई की जाएगी।

पुलिस के अनुसार, बदरीनाथ मंदिर में श्रद्धालुओं के चढ़ावे की गणना सामान्यत: तीन से चार दिन के अंतराल पर की जाती है।

पार्टी करने के बहाने दोस्त की हत्या!

◆सीमा विवाद में फंसी 2 राज्यों की पुलिस, आखिकार उत्तराखण्ड पुलिस को दर्ज करना पड़ा मुकदमा

हमारे संवाददाता

हरिद्वार। पार्टी करने के बहाने दोस्त को बुलाकर उसकी गोली मारकर हत्या कर दी गयी। वारदात का पता एक दिन बाद चला। सूचना मिलने पर दो राज्यों की पुलिस मौके पर पहुंची और सीमा विवाद में उलझ गयी। आखिकार मामला उत्तराखण्ड का निकला जिस कारण उत्तराखण्ड पुलिस ने मुकदमा दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। हालांकि इस सीमा विवाद के चलते हुई देरी के कारण आरोपी फरार हो गये जिनकी तलाश जारी है।

दरअसल यह पूरी घटना हरिद्वार के उत्तराखंड बॉर्डर स्थित मंगलौर कोतवाली क्षेत्र की है। शनिवार की इस घटना का

पता रविवार को चला। हुआ यू कि मंगलौर कोतवाली के मोहम्मदपुर जट्ट गांव का रहने वाला 28 साल का सौरभ एक फैक्ट्री में नौकरी करता था। साथ ही पिता के साथ खेती-बाड़ी में भी हाथ बंटाता था। कुछ साल पहले सौरभ की शादी हुई थी। परिवार में पत्नी और दो छोटे बच्चे और एक भाई और बहन हैं।

दरअसल शनिवार शाम सौरभ को उसके दोस्त सुमित का फोन आया। सुमित ने कहा कि वह उसे लेने आ रहा है सब मिलकर पार्टी करेंगे। दोस्त के कहने पर सौरभ गांव के ही शिव मंदिर के पास आया। वहां पर दो और दोस्त डिंपल और आशीष भी मौजूद थे।

जब चारों दोस्त ईंट भट्ठे के पीछे थे। तभी बाइक से तीन युवक अनुज, रोबिन और प्रद्युम्न पहुंचे। आरोप है कि प्रद्युम्न ने तमंचे से सौरभ पर गोली चला दी। गोली लगने पर सौरभ लहूलुहान हो गया। घटनास्थल पर ही उसकी मौत हो गई। वारदात के बाद आरोपी फरार हो गए। शनिवार की इस वारदात का पता रविवार को चला। ये उत्तराखंड बॉर्डर का मामला था। जिसकी वजह से दोनों राज्यों उत्तर प्रदेश की पुरकाजी थाना पुलिस और उत्तराखंड की मंगलौर कोतवाली पुलिस मौके पर पहुंच गई। हालांकि वहां पर दोनों राज्यों की पुलिस कई घंटों तक एक दूसरे के इलाके का मामला बताकर टालती रही। आखिरकार उच्च अधिकारियों के निर्देश पर मौके पर सीमांकन कराया गया। जिसमें मामला उत्तराखंड के मंगलौर कोतवाली क्षेत्र में निकला। जब सीमा तय हुई तब जाकर मंगलौर पुलिस ने मृतक के पिता राजेंद्र सिंह की शिकायत पर हत्या का मुकदमा दर्ज किया। तीनों मुख्य आरोपी अनुज, रोबिन और प्रद्युम्न के खिलाफ केस दर्ज कर लिया गया है। पुलिस मामले की गहन जांच कर रही है।

दून वैली मेल

संपादकीय

साख और पारदर्शिता

अयोध्या का राम मंदिर केवल एक धार्मिक स्थल नहीं, बल्कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की वैचारिक, सांस्कृतिक और संगठनात्मक प्रतिबद्धता का भी प्रतीक माना जाता है। दशकों तक चले आंदोलन, जनजागरण और सामाजिक-सांस्कृतिक प्रयासों के बाद जब यह मंदिर आकार ले रहा है, तब उससे जुड़ी किसी भी अनियमितता, चोरी या वित्तीय गड़बड़ी की खबर केवल प्रशासनिक मामला नहीं रह जाती, बल्कि वह सीधे उस संगठन की साख से जुड़ जाती है, जिसने इस पूरे अभियान को वैचारिक आधार दिया। यदि मंदिर से जुड़े किसी प्रकरण पर आरएसएस के पदाधिकारियों या कार्यकर्ताओं ने चिंता जताई है, तो उसे हल्के में नहीं लिया जाना चाहिए। यह चिंता किसी राजनीतिक लाभ-हानि का विषय नहीं, बल्कि उस नैतिक जिम्मेदारी का हिस्सा है जो एक अनुशासित और प्रभावशाली संगठन होने के नाते आरएसएस पर स्वाभाविक रूप से आती है। जब कोई संस्था वर्षों तक आस्था, अनुशासन और सेवा की बात करती है, तो उससे जुड़े हर सार्वजनिक प्रकल्प में पारदर्शिता की अपेक्षा और अधिक बढ़ जाती है। राम मंदिर के निर्माण और संचालन को लेकर देशभर के करोड़ों श्रद्धालुओं ने भावनात्मक और आर्थिक योगदान दिया है। बहुत से लोगों ने यह मानकर दान दिया कि यह केवल एक मंदिर नहीं, बल्कि भारतीय सांस्कृतिक पुनर्जागरण का केंद्र बनेगा। ऐसे में यदि दानपात्र, चढ़ावे या मंदिर प्रबंधन से जुड़ी किसी भी स्तर पर संदेह पैदा होता है, तो उसका असर सीधे श्र(ालुओं के विश्वास पर पड़ता है और जब यह मंदिर आरएसएस की वैचारिक विरासत से जुड़ा हो, तब संगठन की जिम्मेदारी और भी बढ़ जाती है। आरएसएस की सबसे बड़ी ताकत उसकी नैतिक छवि और अनुशासन मानी जाती रही है। यही कारण है कि उससे जुड़े किसी भी सार्वजनिक या धार्मिक प्रकल्प में पारदर्शिता की अपेक्षा सामान्य संस्थाओं की तुलना में कहीं अधिक होती है। यदि कहीं कोई गड़बड़ी हुई है, तो आरएसएस को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि जांच न केवल निष्पक्ष हो, बल्कि उसकी प्रक्रिया और निष्कर्ष भी जनता के सामने स्पष्ट रूप से रखे जाएं। संगठन की विश्वसनीयता इसी में है कि वह प्रश्नों से भागे नहीं, बल्कि उनका सामना करे। ऐसे मामलों में सबसे बड़ी भूल यह होती है कि उन्हें राजनीतिक विवाद में बदल दिया जाए। यदि कोई अनियमितता हुई है, तो दोषी की पहचान उसके संगठनात्मक संबंधों या विचारधारा के आधार पर नहीं, बल्कि साक्ष्यों के आधार पर होनी चाहिए। लेकिन उतना ही जरूरी यह भी है कि यदि आरएसएस इस प्रकरण में नैतिक रूप से चिंतित है, तो वह केवल बयान तक सीमित न रहे, बल्कि पारदर्शी व्यवस्था, स्वतंत्र आडिट और जवाबदेही की मांग को आगे बढ़ाए। यही संगठनात्मक परिपक्वता का संकेत होगा। आज धार्मिक संस्थानों में दान की राशि करोड़ों रुपये तक पहुंचती है। ऐसे में पारंपरिक व्यवस्थाएं पर्याप्त नहीं रह जातीं। आरएसएस यदि वास्तव में इस मंदिर को एक आदर्श सांस्कृतिक केंद्र के रूप में देखता है, तो उसे यह भी सुनिश्चित करना होगा कि वहां डिजिटल लेखा-जोखा, नियमित स्वतंत्र आडिट, बहु-स्तरीय निगरानी और सार्वजनिक रिपोर्टिंग जैसी आधुनिक व्यवस्थाएं लागू हों। श्रद्धालुओं का विश्वास केवल भावनात्मक अपील से नहीं, बल्कि ठोस व्यवस्था से सुरक्षित रहता है। यह भी ध्यान रखना होगा कि किसी एक घटना के आधार पर पूरे मंदिर प्रबंधन या आरएसएस की भूमिका पर प्रश्नचिह्न लगाना उचित नहीं होगा। लेकिन यदि संगठन स्वयं इस मामले को गंभीरता से लेता है, तो यह उसकी कमजोरी नहीं, बल्कि उसकी नैतिक शक्ति मानी जाएगी। जांच में देरी, अस्पष्टता या टालमटोल से अफवाहें बढ़ती हैं और सबसे अधिक नुकसान उसी संस्था को होता है, जिसकी साख पर लोग भरोसा करते हैं। आरएसएस लंबे समय से राष्ट्र, संस्कृति, अनुशासन और सेवा की बात करता आया है। इसलिए राम मंदिर जैसे प्रतीकात्मक और संवेदनशील प्रकल्प में उसकी भूमिका केवल प्रेरक नहीं, बल्कि नैतिक संरक्षक जैसी भी मानी जाएगी। यदि कहीं कोई कमी है, तो उसे स्वीकार कर सुधारना ही संगठन की प्रतिष्ठा को और मजबूत करेगा और यदि आरोप निराधार हैं, तो उनकी निष्पक्ष जांच और स्पष्ट खंडन भी उतना ही जरूरी है।

शराब के साथ महिला सहित तीन गिरफ्तार

संवाददाता

देहरादून। पुलिस ने शराब के साथ महिला सहित तीन लोगों को गिरफ्तार कर उनके खिलाफ मुकदमा दर्ज कर वाहन सीज कर दिये।

प्राप्त जानकारी के अनुसार ऋषिकेश कोतवाली पुलिस ने पुरानने रेलवे स्टेशन के पास एक एक्टिवा सवार को रूकने का इशारा किया तो वह पुलिस को देख एक्टिवा को तेजी से भगा ले गया। पुलिस ने पीछा कर उसको थोडी दूरी पर ही दबोच लिया। तलाशी लेने पर पुलिस ने उसके कब्जे से 180 पव्वे शराब के बरामद कर लिये।

पूछताछ में उसने अपना नाम सौरभ पासवान पुत्र अधुल पासवान निवासी चन्द्रेश्वर नगर बताया। वहीं पुलिस ने एक अन्य स्कूटी सवार को भी 180 पव्वों के साथ गिरफ्तार किया जिसने अपना नाम सुमित पुत्र राम निगली निवासी चन्द्रेश्वर नगर बताया। इसके साथ ही ऋषिकेश कोतवाली पुलिस ने आईडीपीएल के पास से एक महिला को 39 पव्वे शराब के साथ गिरफ्तार किया जिसने अपना नाम प्रेमलता पत्नी राजकुमार निवासी आईडीपीएल बताया। पुलिस ने तीनों के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर लिया है।

उत्तराखंड भाजपा का चुनावी 'ब्लूप्रिंट'

कार्यालय संवाददाता

देहरादून। उत्तराखंड की राजनीति में चुनावी बिगुल भले अभी औपचारिक रूप से नहीं बजा हो, लेकिन भाजपा ने अपनी सबसे बड़ी ताकत संगठन को चुनावी मोड में डाल दिया है। पार्टी के भीतर से निकल रहे संकेत बताते हैं कि 2027 का विधानसभा चुनाव केवल सरकार के विकास कार्यों के भरोसे नहीं, बल्कि बूथ-दर-बूथ चलने वाली संगठनात्मक रणनीति के दम पर लड़ने की तैयारी है। भाजपा नेतृत्व का संदेश साफ है सरकार चुनाव नहीं जिताती, संगठन जिताता है। यही कारण है कि प्रदेश से लेकर बूथ तक जिम्मेदारियों का नया खाका तैयार किया जा रहा है। संगठन को केवल कार्यक्रम कराने वाली इकाई नहीं, बल्कि चुनावी रणनीति के संचालन केंद्र के रूप में देखा जा रहा है।

भाजपा अच्छी तरह जानती है कि लगातार दो कार्यकाल के बाद एंटी-इनकंबेंसी का जोखिम किसी भी सरकार के सामने स्वाभाविक रूप से खड़ा होता है। महंगाई, बेरोजगारी, पलायन, स्थानीय विकास, भू-कानून और क्षेत्रीय अपेक्षाएं जैसे मुद्दे विपक्ष के लिए राजनीतिक अवसर बन सकते हैं। इसी पृष्ठभूमि में पार्टी अब विकास योजनाओं के प्रचार से आगे बढ़कर जनता से सीधा संवाद, कार्यकर्ताओं की सक्रियता और स्थानीय स्तर पर फीडबैक तंत्र को मजबूत करने पर जोर दे रही है। इस बार भाजपा की रणनीति का केंद्र मंचों की बड़ी रैलियां नहीं, बल्कि बूथ स्तर पर

◆2027 की जंग में हर कार्यकर्ता रहेगा वार रूम का हिस्सा
◆हर बूथ पर राजनीतिक मनोविज्ञान जीतने की है पूरी तैयारी
◆सत्ता विरोधी माहौल की आशंका को साधने की है कवायद

लगातार संपर्क अभियान बताया जा रहा है। हर बूथ पर मतदाता सूची का सूक्ष्म विश्लेषण, नए मतदाताओं तक पहुंच, सरकारी योजनाओं के लाभार्थियों से संवाद, सोशल मीडिया के स्थानीय नेटवर्क और पन्ना प्रमुखों की सक्रियता यह सभी चुनावी मशीनरी के अहम हिस्से होंगे।

सूत्र बताते हैं कि उत्तराखंड जैसे राज्य में कई सीटों पर जीत-हार का अंतर बहुत कम रहता है। ऐसे में बूथ प्रबंधन निर्णायक भूमिका निभा सकता है। भाजपा नेतृत्व के सामने एक बड़ी चुनौती संगठन के भीतर समन्वय बनाए रखना भी है। चुनाव नजदीक आते ही टिकट की दावेदारी, स्थानीय गुटबाजी और कार्यकर्ताओं की अपेक्षाएं बढ़ना स्वाभाविक है। सूत्रों के अनुसार संगठनात्मक बैठकों में इस बात पर भी जोर दिया जा रहा है कि संभावित असंतोष को चुनाव से पहले ही चिन्हित किया जाए। जिला और मंडल स्तर से लगातार फीडबैक लेने, निष्क्रिय इकाइयों को सक्रिय करने और स्थानीय नेतृत्व के बीच संवाद बढ़ाने पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है। भाजपा सरकार विकास परियोजनाओं, सड़क, स्वास्थ्य, पर्यटन, निवेश और धार्मिक पर्यटन जैसे मुद्दों को अपनी उपलब्धि के रूप में सामने रखना चाहती है। लेकिन संगठन को यह जिम्मेदारी भी दी जा रही है कि वह यह समझे कि जनता इन कार्यों को किस नजर से देख रही है। यानी केवल उपलब्धियां गिनाना पर्याप्त नहीं होगा, बल्कि यह भी जरूरी होगा कि उनका असर मतदाता तक विश्वसनीय ढंग से पहुंचे।

भाजपा का आकलन है कि कांग्रेस रोजगार, महंगाई, पलायन, स्थानीय पहचान और क्षेत्रीय असंतोष जैसे मुद्दों को आक्रामक ढंग से उठाने का प्रयास करेगी। इसलिए संगठन को विपक्ष के आरोपों का तथ्यात्मक जवाब देने और स्थानीय स्तर पर राजनीतिक संवाद बनाए रखने की जिम्मेदारी भी सौंपी जा रही है। चुनावी रणनीति में पहली बार मतदान करने वाले युवाओं, महिला मतदाताओं और सरकारी योजनाओं के लाभार्थियों तक लक्षित पहुंच बनाने की तैयारी दिखाई दे रही है। डिजिटल माध्यमों, सोशल मीडिया और स्थानीय

▶▶ शेष पृष्ठ 7 पर

सत्ता की 'हैट्रिक' रोकने को कांग्रेस तैयार

कार्यालय संवाददाता

देहरादून। वर्ष 2017 और 2022 के विधानसभा चुनाव में लगातार हार का सामना करने के बाद अब उत्तराखंड कांग्रेस ने 2027 के चुनाव को करो या मरो की लड़ाई मान लिया है। करीब एक दशक से सत्ता से बाहर कांग्रेस इस बार कोई राजनीतिक जोखिम लेने के मूड में नहीं दिख रही। यही वजह है कि चुनाव में अभी लंबा समय बाकी होने के बावजूद पार्टी ने संगठन को सक्रिय करने, कार्यकर्ताओं में नई ऊर्जा भरने और जनता के बीच अपनी मौजूदगी मजबूत करने की कवायद तेज कर दी है।

प्रदेश कांग्रेस की रणनीति साफ हैकृचुनाव की घोषणा का इंतजार नहीं, बल्कि अभी से चुनावी माहौल तैयार करना। इसी रणनीति के तहत जिलों में परिवर्तन यात्राएं निकाली जा रही हैं। इन यात्राओं का उद्देश्य केवल सरकार की नीतियों का विरोध करना नहीं, बल्कि बूथ स्तर तक निष्क्रिय संगठन को सक्रिय करना, स्थानीय मुद्दों को पहचानना और कार्यकर्ताओं को चुनावी मोड में लाना भी है। उत्तराखंड कांग्रेस के लिए राहत की बात यह है कि इस बार पार्टी का केंद्रीय नेतृत्व भी राज्य को लेकर पहले की तुलना में अधिक सक्रिय दिखाई दे रहा है। राष्ट्रीय स्तर के नेताओं के उत्तराखंड दौरे शुरू हो चुके हैं और प्रदेश नेतृत्व के साथ लगातार रणनीतिक बैठकों का सिलसिला चल रहा है।

सूत्रों के अनुसार पार्टी का शीर्ष नेतृत्व

◆2027 की जंग के लिए अभी से मैदान में उतरी कांग्रेस
◆परिवर्तन यात्राओं से लेकर हाईकमान की सक्रियता तक
◆सत्ता वापसी का खाका तैयार करने में जुटी कांग्रेस पार्टी

केवल सभाएं करने तक सीमित नहीं रहना चाहता, बल्कि संगठन की वास्तविक स्थिति, जिला इकाइयों की सक्रियता और संभावित चुनावी समीकरणों का भी आकलन कर रहा है। संदेश स्पष्ट है कि 2027 का चुनाव केवल प्रदेश नेतृत्व के भरोसे नहीं छोड़ा जाएगा। कांग्रेस के सामने सबसे बड़ी चुनौती भाजपा नहीं, बल्कि अपना संगठन है। कई जिलों में गुटबाजी, निष्क्रिय संगठन और बूथ स्तर पर कमजोर ढांचा लंबे समय से पार्टी की कमजोरी रहे हैं।

इसी कारण प्रदेश मुख्यालय में लगातार समीक्षा बैठकों का दौर चल रहा है। जिला और ब्लाक स्तर के पदाधिकारियों से रिपोर्ट ली जा रही है, संगठनात्मक कार्यक्रमों की निगरानी की जा रही है और बूथ स्तर तक नई टीम तैयार करने पर जोर दिया जा रहा है। पार्टी नेतृत्व यह मानता है कि यदि संगठन मजबूत नहीं हुआ, तो केवल बड़े नेताओं की रैलियां चुनावी जीत में नहीं बदल पाएंगी। कांग्रेस की परिवर्तन यात्रा को राजनीतिक पर्यवेक्षक दो नजरियों से देख रहे हैं। पहला, यह सरकार के खिलाफ माहौल बनाने का प्रयास है। दूसरा, यह पार्टी के लिए एक संगठनात्मक अभ्यास भी है, जिसके जरिए यह परखा जा रहा है कि किस जिले में कार्यकर्ता कितने सक्रिय हैं और किन क्षेत्रों में अतिरिक्त मेहनत की जरूरत है। इन यात्राओं के दौरान महंगाई, बेरोजगारी, पलायन, शिक्षा, स्वास्थ्य, महिला सुरक्षा, किसानों की समस्याएं और स्थानीय मुद्दे प्रमुखता से उठाए जा रहे हैं।

कांग्रेस की राह आसान नहीं है। भाजपा पहले से ही बूथ प्रबंधन, मतदाता सूची, लाभार्थी संपर्क और संगठनात्मक विस्तार पर काम कर रही है। ऐसे में कांग्रेस को केवल सरकार की आलोचना से आगे बढ़कर मतदाताओं के सामने एक विश्वसनीय विकल्प भी प्रस्तुत करना होगा। राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि कांग्रेस यदि सत्ता विरोधी भावना को राजनीतिक समर्थन में बदलना चाहती है, तो उसे मजबूत संगठन, स्पष्ट नेतृत्व और एक ठोस चुनावी एजेंडा साथ लेकर चलना होगा।

प्रदेश कांग्रेस में यह सवाल भी महत्वपूर्ण रहेगा कि चुनाव के समय पार्टी

▶▶ शेष पृष्ठ 7 पर

खुटकुनी भैरव मंदिर में लगे सीसीटीवी कैमरे, सुरक्षा व्यवस्था हुई मजबूत

अल्मोड़ा(आरएनएस)। पांडेखोला स्थित प्राचीन खुटकुनी भैरव मंदिर की सुरक्षा व्यवस्था को मजबूत करने के लिए मंदिर परिसर में सीसीटीवी कैमरे स्थापित किए गए। मंदिर समिति की पहल पर लगाए गए इन कैमरों के माध्यम से परिसर की चौबीसों घंटे निगरानी की जा सकेगी, जिससे किसी भी संदिग्ध गतिविधि पर नजर रखने के साथ ही आवश्यकता पड़ने पर पुलिस जांच में भी सहायता मिलेगी। मंदिर समिति के पदाधिकारियों ने बताया कि पूर्व में मंदिर में दो बार चोरी की घटनाएं हो चुकी हैं।

इन घटनाओं के बाद श्रद्धालुओं और स्थानीय लोगों में सुरक्षा को लेकर चिंता बनी हुई थी। इसी को देखते हुए समिति ने आधुनिक सीसीटीवी कैमरे लगाने का निर्णय लिया, ताकि मंदिर की सुरक्षा और अधिक सुदृढ़ हो सके तथा असामाजिक तत्वों पर प्रभावी निगरानी रखी जा सके। समिति का कहना है कि धार्मिक स्थलों की सुरक्षा केवल समिति ही नहीं, बल्कि पूरे समाज की सामूहिक जिम्मेदारी है।

सीसीटीवी कैमरे लगने से श्रद्धालुओं को सुरक्षित वातावरण मिलेगा और किसी भी अप्रिय घटना की स्थिति में साक्ष्य उपलब्ध होने से जांच प्रक्रिया भी आसान होगी। इस पहल में नवदुर्गा समिति लक्ष्मेश्वर के अध्यक्ष सुनील कर्नाटक, खुटकुनी भैरव मंदिर समिति के अध्यक्ष हेम चंद्र जोशी, पार्षद त्रिलोचन जोशी, पार्षद अमित साह मोनू, पार्षद अभिषेक जोशी, पार्षद ज्योति साह, जगदीश उपाध्याय, दीवान सिंह बिष्ट, नमित जोशी, राजेंद्र सिंह भोज, पीयूष पांडे, हेमंत पांडे, गगन पांडे, भावेश पांडे, विक्की पांडे, हर्षवर्धन जोशी, मोहन चंद्र जोशी और रमेश चंद्र पंत का विशेष सहयोग रहा।

स्थानीय श्रद्धालुओं ने मंदिर समिति के इस प्रयास की सराहना करते हुए विश्वास जताया कि सीसीटीवी कैमरों की स्थापना से मंदिर की सुरक्षा व्यवस्था और मजबूत होगी तथा भविष्य में चोरी जैसी घटनाओं की पुनरावृत्ति रोकने में मदद मिलेगी। समिति ने आगे भी मंदिर परिसर में सुरक्षा और सुविधाओं के विस्तार के लिए लगातार कार्य करने का भरोसा दिलाया।

किसानों की आय बढ़ाने को नवाचार और गुणवत्तापूर्ण उत्पादन पर जोर: डीएम

बागेश्वर(आरएनएस)। जिलाधिकारी अपूर्वा पाण्डे की अध्यक्षता में गुरुवार को कलेक्ट्रेट सभागार में कृषि, उद्यान एवं मत्स्य विभाग की समीक्षा बैठक आयोजित हुई। बैठक में विभिन्न विभागों की योजनाओं, उत्पादन गतिविधियों तथा किसानों की आय बढ़ाने के लिए किए जा रहे प्रयासों की समीक्षा की गई।

जिलाधिकारी ने अधिकारियों को किसानों के लिए नियमित एक्सपोजर विजिट आयोजित करने के निर्देश दिए, ताकि उन्हें आधुनिक खेती, नई तकनीकों और सफल कृषि मॉडल की जानकारी मिल सके। उन्होंने उद्यान विभाग को जनपद में आलू बीज (सीड) उत्पादन को बढ़ावा देने के लिए कार्ययोजना तैयार करने को कहा।उन्होंने ब्लैक राइस और रेड राइस की खेती को प्रोत्साहित करने, उत्पादन बढ़ाने तथा गुणवत्तापूर्ण बीज तैयार करने वाले प्रगतिशील किसानों की पहचान करने के निर्देश भी दिए। साथ ही सभी संबंधित विभागों को फार्म रजिस्ट्री का कार्य तेजी से पूरा करने को कहा।

बैठक में उद्यान विभाग को एवोकाडो और लिलियम जैसी उच्च मूल्य वाली फसलों के उत्पादन को बढ़ावा देने तथा जनपद में कोल्ड स्टोरेज की स्थापना के लिए शीघ्र उपयुक्त भूमि चिन्हित करने के निर्देश दिए गए।

ट्रांसमिशन लाइन परियोजना में अनियमितता का आरोप

काशीपुर(आरएनएस)। सीतारामपुर के लोगों ने उपजिलाधिकारी को शिकायत पत्र देकर 400 केवी ट्रांसमिशन लाइन परियोजना में गंभीर अनियमितताओं का आरोप लगाया।उन्होंने परियोजना का कार्य करा रही कंपनी के कर्मचारियों पर मनमानी, जबरन और अवैध तरीके से कार्य करने का आरोप लगाते हुए मामले की जांच कराने तथा जांच पूरी होने तक निर्माण कार्य पर रोक लगाने की मांग की है। आरोप है कि कंपनी ने विद्युत मंत्रालय को गुमराह कर कथित रूप से गलत शपथ पत्र के आधार पर परियोजना का लाइसेंस प्राप्त किया। साथ ही निर्धारित समय सीमा में कार्य पूरा नहीं किया और प्रस्तावित ट्रांसमिशन लाइन के संबंध में स्थानीय स्तर पर आवश्यक सार्वजनिक सूचना भी प्रकाशित नहीं की।

शिकायत में यह भी कहा गया है कि कंपनी निर्धारित सर्वे मानचित्र और मानकों के विपरीत कार्य कर रही है तथा स्थानीय प्रशासन की मिलीभगत से नियमों की अनदेखी कर रही है। शिकायतकर्ताओं ने कंपनी की मूल कंप्लेन करते हुए उसके विरुद्ध एक सीबीआई एफआईआर का हवाला दिया। उन्होंने मांग की है कि पूरे प्रकरण की निष्पक्ष जांच कर दोषियों के विरुद्ध कार्रवाई की जाए तथा परियोजना से संबंधित लाइसेंस निरस्त करने पर भी विचार किया जाए।

इस दौरान केवल सिंह, सुखविंदर सिंह, मेजर सिंह, रविन्द्र सिंह, मनशरन सिंह, मंजीत सिंह, गुरपाल सिंह, हरदीप सिंह मान, मंजीत सिंह, प्रेम बोहरा, टीका राम सैनी, प्रेम सिंह सहोता, गुरदेव सिंह, सवेन्द्र प्रसाद मुन्ना समेत आदि मौजूद रहे।

खो गई सिलबट्टे की 'खर्र-खर्र' और रसोई की 'रौनक'

- आधुनिक गैजेट्स ने बदल दी है पहाड़ के रसोई की अनोखी रंगत
- मिक्सर व ग्राइंडर के शोर में कहीं खो गई सिलबट्टे की खर्र-खर्र
- आज भी अधूरी है सिलबट्टे वाले नमक-चटनी की सोंधी खुशबू
- पहाड़ के गांवों की रसोई में यह केवल पत्थर नहीं एक संस्कृति

कार्यालय संवाददाता

देहरादून। एक समय था जब पहाड़ के किसी भी गांव में सुबह की शुरुआत केवल पक्षियों की चहचहाहट से नहीं होती थी, बल्कि रसोई से आती सिलबट्टे पर मसाले पीसने की खर्र-खर्र की आवाज से होती थी। वह आवाज़ किसी मशीन की नहीं, बल्कि एक घर के जीवंत होने की पहचान होती थी। सिलबट्टा केवल दो पत्थरों का मेल नहीं था। वह पहाड़ की गृहस्थी का सबसे भरोसेमंद साथी था। उस पर पीसी गई हरी मिर्च, भांग की चटनी, भुना नमक, जाखिया, तिल, धनिया और लहसुन का स्वाद आज भी किसी आधुनिक मिक्सर की तेज धार नहीं दे पाती। आज रसोई में मिक्सर है, ग्राइंडर है, फूड प्रोसेसर है, लेकिन सिलबट्टे पर पीसे मसालों की आत्मा कहीं पीछे छूट गई है।

पहाड़ की माताएं घंटों सिलबट्टे पर मसाले पीसती थीं। उनके हाथों की लय ऐसी होती थी कि मसाले केवल पिसते नहीं थे, उनमें अपनापन भी घुल जाता था। जब भांग की चटनी सिल पर तैयार होती थी, उसकी खुशबू पूरे आंगन में फैल जाती थी। बच्चे रोटी लेकर पहले ही बैठ जाते थे। कहा जाता है कि सिलबट्टे पर पीसने से मसालों का तेल और प्राकृतिक सुगंध बनी रहती है। शायद यही कारण है कि पुराने लोग आज भी कहते हैं- मिक्सर मसाला पीसता है, सिलबट्टा स्वाद बनाता है। आज गांवों में भी कई सिलबट्टे धूल खा रहे हैं। कुछ घरों में तुलसी के चौरे के पास पड़े हैं, तो कहीं गोठ के किनारे। नई पीढ़ी के लिए वह बस एक भारी पत्थर है, लेकिन बुजुर्गों की आंखों में उसे देखकर बीते समय की पूरी कहानी उतर आती है। उस पत्थर पर वर्षों तक परिवार की रोटी का स्वाद तैयार हुआ। त्योहारों की चटनियां बनीं। मेहमानों के स्वागत की तैयारी हुई। बच्चों के लिए पहली बार दलिया पीसा गया। कितनी पीढ़ियों की स्मृतियां उसकी सतह पर आज भी जैसे अंकित हैं।

सिलबट्टा उस दौर की पहचान भी है जब पहाड़ आत्मनिर्भर था। मसाले बाजार से तैयार नहीं आते थे। खेत में उगते थे घर में सुखाए जाते थे और सिलबट्टे पर पीसे जाते थे। हर चटनी का स्वाद अलग होता था क्योंकि उसमें घर की मिट्टी, पानी और हाथों का स्पर्श शामिल होता था। यह केवल रसोई का औजार नहीं था, बल्कि पहाड़ की महिलाओं के श्रम, धैर्य और आत्मसम्मान का जीवंत प्रतीक था।

बदलती जीवनशैली ने सिलबट्टे को लगभग रसोई से बाहर कर दिया है। शहरों में तो यह सजावट की वस्तु बन चुका है और गांवों में भी इसका उपयोग तेजी से घट रहा है। सवाल यह है कि क्या आने वाली पीढ़ी केवल किताबों में पढ़ेगी कि कभी मसाले पत्थर पर भी पीसे जाते थे? क्या वह कभी समझ पाएंगे कि भांग की चटनी का असली स्वाद मशीन से नहीं, मां के हाथों और सिलबट्टे की धीमी रगड़ से पैदा होता था? पहाड़ की संस्कृति केवल मंदिरों, मेलों और लोकगीतों में नहीं बसती। वह रसोई में रखे उन साधारण दिखने वाले उपकरणों में भी जीवित है, जिन्होंने पीढ़ियों का जीवन संवारा। सिलबट्टा उनमें सबसे महत्वपूर्ण है। यदि हम अपनी पारंपरिक रसोई, स्थानीय भोजन और लोक संस्कृति को बचाना चाहते हैं, तो सिलबट्टे जैसी विरासत को भी सम्मान देना होगा। क्योंकि जिस दिन पहाड़ के घरों से सिलबट्टे की आखिरी खनक खत्म हो जाएगी, उस दिन केवल एक पत्थर नहीं, बल्कि हमारी सांस्कृतिक स्मृति का एक अनमोल अध्याय भी हमेशा के लिए मौन हो जाएगा।

पुरानी पेंशन की मांग पर शिक्षकों का प्रदर्शन

काशीपुर(आरएनएस)। आरटीई अधिनियम लागू होने से पहले नियुक्त शिक्षकों को शिक्षक पात्रता परीक्षा (टीईटी) से छूट और पुरानी पेंशन व्यवस्था बहाल करने की मांग को लेकर शिक्षकों ने तहसील परिसर में धरना-प्रदर्शन किया। इसके बाद मुख्यमंत्री को संबोधित ज्ञापन एसडीएम के पेशकार प्रकाश मेहर को सौंपा। शिक्षक और शिक्षिकाएं तहसील पहुंचे।

उन्होंने टीईटी से छूट और पुरानी पेंशन बहाली की मांग को लेकर नारेबाजी करते हुए प्रदर्शन किया। प्राथमिक शिक्षक संघ के अध्यक्ष अमित त्यागी और मंत्री पंकज चौहान ने कहा कि आरटीई अधिनियम लागू होने से पहले नियुक्त सभी शिक्षकों को सेवा में बने रहने और पदोन्नति के लिए टीईटी से मुक्त रखा जाए।कहा कि अधिनियम में संशोधन कर आरटीई लागू होने से पूर्व एनसीटीई और राज्य सरकार के निर्धारित मानकों के अनुसार नियुक्त शिक्षकों को न्याय दिया जाए। साथ ही शिक्षकों और कर्मचारियों के लिए पुरानी पेंशन व्यवस्था बहाल कर नई पेंशन योजना को वापस लिया जाए।

यहां अमित त्यागी, पंकज कुमार, सुशील कुमार, अशोक चौहान, कौटिल्य रस्तोगी, नौशाद, जावेद, शाने आजम, अनिल कुमार, अरविंद चौहान, सौरभ चौहान, राधेश्याम, कौशल चौधरी, अनिल चौहान रहे।

किच्छा बाईपास पर एलएससी इन्फ्राटेक ने चलाया व्यापक पौधरोपण अभियान

रुद्रपुर(आरएनएस)। एलएससी इन्फ्राटेक लिमिटेड की ओर से किच्छा बाईपास रोड पर व्यापक पौधरोपण अभियान चलाया गया। कार्यक्रम में ग्रुप के निदेशक अभिषेक अग्रवाल और जिला खान अधिकारी मनीष परिहार ने विभिन्न प्रजातियों के पौधे रोपकर उनके संरक्षण का संकल्प लिया। अभिषेक अग्रवाल ने कहा कि पर्यावरण संरक्षण प्रत्येक व्यक्ति की नैतिक जिम्मेदारी है। उन्होंने बताया कि कुमार ग्रुप अपने विभिन्न प्रतिष्ठानों में पहले ही हजारों पौधे लगा चुका है और मानसून सत्र के दौरान अन्य स्थानों पर भी पौधरोपण अभियान जारी रहेगा। उन्होंने उत्तराखंड सरकार के 'एक वृक्ष मां के नाम' अभियान को जलवायु परिवर्तन और ग्लोबल वार्मिंग जैसी चुनौतियों से निपटने की दिशा में महत्वपूर्ण पहल बताते हुए हर व्यक्ति से वर्ष में कम से कम एक पौधा लगाने का आह्वान किया।कार्यक्रम में कुमार ग्रुप के अधिकारी, कर्मचारी और अन्य गणमान्य लोग मौजूद रहे।

मुख्य चिकित्सा अधिकारी डॉ. केके अग्रवाल ने बताया कि भारत सरकार के स्वास्थ्य व परिवार कल्याण मंत्रालय के निर्देशों के अनुसार जिले के सभी सरकारी अस्पतालों, उप-जिला चिकित्सालयों, सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्रों और आयुष्मान आरोग्य मंदिरों में परिवार नियोजन व जनसंख्या स्थिरीकरण को लेकर व्यापक जागरूकता अभियान चलाया जाएगा।

उन्होंने बताया कि इस वर्ष अभियान की थीम स्वस्थ और खुशहाल मां-बच्चे के लिए और अनचाहे गर्भ को रोकने के लिए गर्भधारण के बीच स्वस्थ समय और अंतर रखी गई है। वहीं अभियान का नारा जब बच्चों में हो सही अंतराल, परिवार बने स्वस्थ और खुशहाल रहेगा।

अभियान से पूर्व दंपति संपर्क पखवाड़ा चलाया जा रहा है। इसमें नवविवाहित दंपत्तियों और एक बच्चे वाले परिवारों को परिवार नियोजन के प्रति जागरूक किया जा रहा है।

डॉ. अग्रवाल ने बताया कि जिले के उच्च प्राथमिकता वाले क्षेत्रों में विशेष सास-बहू सम्मेलन आयोजित किए जाएंगे। इनमें एएनएम, कम्युनिटी हेल्थ ऑफिसर और आशा कार्यकर्ता दो बच्चों के बीच कम से कम तीन वर्ष का अंतर रखने के लाभ बताएंगे। साथ ही अंतरा इंजेक्शन, छाया गोली, आईयूसीडी सहित सभी गर्भनिरोधक साधन निशुल्क उपलब्ध कराए जाएंगे।

योग्य दंपत्तियों की ओपीडी में काउंसलिंग की जाएगी और पुरुष व महिला नसबंदी के लिए विशेषज्ञ चिकित्सकों की देखरेख में विशेष शल्य चिकित्सा शिविर भी आयोजित किए जाएंगे। अभियान के दौरान परिवार नियोजन अपनाने वाली सफल माताओं को रोल मॉडल के रूप में सम्मानित भी किया जाएगा।

तेजी से वजन कम करने के लिए डाइटिंग करें या जिम जाएं!

आजकल वजन कम करने का एक क्रेज जा देखने को मिल रहा है। हर कोई अपनी फिटनेस और लुक को लेकर फिक्रमंद नजर आ रहा है। चुस्त और दुरुस्त रहने के लिए लोग डाइट को बेहतर बना रहे हैं और जिम में भी पसीना बहा रहे हैं। सोशल मीडिया पर वेट लॉस को लेकर कई वीडियो बन रहे हैं, जिसे देखकर भी लोग इंस्पायर हो रहे हैं। लेकिन सबसे बड़ा सवाल ये है कि अगर फिट रहना है तो जिम या डाइट दोनों में से किस पर ज्यादा फोकस करना ज्यादा बेहतर है। क्योंकि ज्यादातर लोग इस बात को लेकर कंफ्यूज हैं कि डाइट मेंटेन करने के बाद जिम जाना जरूरी है भी या नहीं। आइए जानते हैं जिम या डाइट वेट कम करने में क्या है सबसे बेहतर।।।

क्या कहते हैं एक्सपर्ट

हेल्थ एक्सपर्ट के मुताबिक अगर बीएमआई 25 से ज्यादा है तो ये बताता है कि आपका वजन बढ़ा हुआ है। हमारे देश में इसे 23।99 तय किया गया है। बीएमआई 24 से ज्यादा ओवरवेट कहलाता है और 3० से ज्यादा मोटापे वाली सिचुएशन बताता है। डॉक्टरों का मानना है कि वजन कम करने के लिए जितना जरूरी डाइट मेंटेन रखना है, उतना ही जरूरी फिजिकल एक्टिविटीज भी है। हालांकि, वे ये भी मानते हैं है कि ये तय कर पाना काफी कठिन है कि वजन कम करने के लिए जिम या डाइट में से ज्यादा बेहतर कौन है।

वजन घटाने में डाइट की भूमिका

हेल्थ एक्सपर्ट के मुताबिक, डाइट में कैलोरी इंटेक जैसी दूसरी चीजों का ध्यान रखकर वजन को बढऩे से पहले ही कंट्रोल कर सकते हैं। ओवरवेट या मोटापे की समस्या से जूझ रहे हैं तो जिम जा सकते हैं लेकिन इस दौरान भी डाइट पर फोकस बनाए रखना हैं। जो भी खा रहे हैं, उसे पचाने के लिए इंडोर फिजिकल एक्टिविटी कर सकते हैं।

मोटापा कम करने में जिम का रोल

एक्स्ट्रा वजन है यानी मोटापे की समस्या से जूझ रहे हैं और वजन कम करना चाहते हैं तो कुछ बातों का ध्यान रखना चाहिए। सबसे पहले समझ लें कि मोटापा एक तरह की बीमारी है जो हाइपरटेंशन, डायबिटीज, जोड़ों में दर्द की समस्या शरीर को दे सकता है। मोटापा कम करने के लिए जिम जा सकते हैं। इसका असर जल्दी ही देखने को मिलता है। हालांकि, इसके लिए सही ट्रेनर चुनें और डाइट के लिए एक्सपर्ट की सलाह लें।

सावधान! जरुरत से ज्यादा कॉफी पीने से आपके शरीर का हो सकता है बुरा हाल!

चार दोस्तों के साथ ठहाके लगाते हुए कॉफी पीने में बड़ा मजा आता है। अक्सर कामकाजी लोग एक साथ बैठते हैं तो कॉफी ही पीते हैं। इसके पीछे का कारण है खुद को रिफ्रेश करना थकावट को दूर करना।।। लेकिन अगर आप कैफीन बहुत अधिक मात्रा में ले रहे हैं तो ये बड़े पैमाने पर आपके लिए खराबी पैदा कर सकता है। इससे आपको कई सारी शारीरिक समस्याओं से जूझना पड़ सकता है आइए जानते हैं।

न्यूरोफार्माकोल जर्नल में प्रकाशित एक अध्ययन बताता है कि बहुत अधिक कैफीन के गंभीर परिणाम हो सकते हैं।ये यहीं ख़त्म नहीं होता।अध्ययन में ये भी बताया गया है कि अगर कैफीन को कम मात्रा में न लिया जाए तो चिंता, दिल की धड?न, पेट की समस्याएं और नींद की समस्या भी हो सकती है।द ऑनकोटारगेट पत्रिका में प्रकाशित एक अध्ययन में कहा गया है कि लंबे समय तक रोजाना तीन से चार कप से अधिक कॉफी पीने से मायोकार्डियल इन्फ्रक्शन हो सकता है।सीधे शब्दों में कहें तो दिल का दौरा पड़ सकता है।

सुबह कॉफी पीने से पेट अच्छी तरह से साफ होता है। शरीर में जमा मल को निकालना आसान होता है लेकिनअधिक मात्रा में कैफीन का सेवन करने से आपको दस्त और एसिड रिफ्लक्स हो सकता है। कैफीन तंत्रिका तंत्र को उत्तेजित करता है, जिसके परिणामस्वरूप ये रक्तचाप बढ़ाता है। हालाँकि रक्तचाप में ये बढ़ोतरी अस्थायी है और स्वस्थ व्यक्तियों पर इसका कोई खास प्रभाव नहीं पड़ता है, जो लोग उच्च रक्तचाप से पीड़ित हैं उन्हें कैफीन का सेवन सीमित करना चाहिए। कैफीन का सेवन आपको अधिक पेशाब के लिए भी मजबूर कर सकता है। ऐसा इसलिए है क्योंकि कैफीन माइल्ड डाययूरेटिक के रूप में कार्य करता है। हालाँकि, इसके कारण होने वाले डिहाइड्रेशन का कोई ठोस प्रमाण नहीं है। बहुत सारे लोग जब थक जाते हैं तो अधिक ऊर्जावान महसूस करने के लिए कॉफी पीते हैं। कैफीन द्वारा प्रदान की जाने वाली ऊर्जा वृद्धि अस्थाई होती है। जब यह एक बार खत्म हो जाता है तो आप थका हुआ महसूस करने लगते हैं।अनिद्रा,आपको अधिक थका हुआ और थका हुआ बना सकती है।

वैधानिक सूचना

सुविज्ञ पाठकों से आग्रह है कि इस समाचार पत्र में प्रकाशित किसी भी विज्ञापन में दिए गए तथ्यों, शर्तों और दावों के प्रति वह खुद भी आश्वस्त हो लें। पाठकों से आग्रह है कि वह प्रकाशित विज्ञापन से प्रभावित होकर कोई कदम उठाने से पहले अपने स्तर पर भी स्वयं के संतुष्ट होने तक संपूर्ण व्यावहारिक जानकारी कर लें। भविष्य में किसी भी प्रकाशित विज्ञापन व लेख में निहित दावों या शर्तों को लेकर पाठकगण को कोई असुविधा या परेशानी होती है तो *सांध्य दैनिक दून वैली मेल* के मुद्रक, प्रकाशक या सम्पादक की कोई जवाबदेही नहीं होगी।

–प्रबंधक विज्ञापन

केला खाने से दूर हो सकती हैं कई तरह की बीमारियां

केला खाने से एक-दो नहीं बल्कि 8० तरह की बीमारियां दूर हो सकती है। यह काफी पौष्टिक और फायदेमंद फल है। इसे खाने से शरीर ताकतवर बनता है और कई तरह समस्याओं से छुटकारा मिल सकता है। हालांकि, कई बार यह खतरनाक भी हो सकता है और सेहत को नुकसान पहुंचाने लगता है। यही कारण है कि आयुर्वेद में कुछ लोगों को केला खाने से मना किया जाता है। आइए जानते हैं किन लोगों को केला भूलकर भी नहीं खाना चाहिए।

केला कितना फायदेमंद

हेल्थ एक्सपर्ट्स के मुताबिक, केला सेहत का सच्चा दोस्त होता है। यह पौष्टिक तत्वों का खजाना होता है। इसमें विटामिन सी, फाइबर, पोटैशियम, मैंगनीज, विटामिन बी 6, एंटीऑक्सीडेंट ग्लूटाथियोन, फेनोलिक्स, डेल्फिडिनिन, रुटिन और नारिंगिन पाया जाता है, जो वात पित्त दोष को बैलेंस करने का काम करते हैं। आयुर्वेद कहता है कि वात के बिगडऩे से करीब 8० तरह की बीमारियां हो सकती हैं। इसमें ड्राइनेस, हड्डियों में गैप, कब्ज जैसी कई समस्याएं हैं। इसलिए केला खाने से इन सभी से बचा जा सकता है।

केला किसके लिए फायदेमंद

वैसे तो केला हर किसी को फायदेमंद माना जाता है। हालांकि, आयुर्वेद के अनुसार, केले की प्रकृति ठंडा होता है और यह पचने में हैवी होता है। केला लुब्रिकेशन का काम भी करता है। अगर किसी की बॉडी ड्राई रहती है या हमेशा थकान लगती है तो उसे केला खाना चाहिए। इसके अलावा अच्छी नींद न आने, गुस्सा आने, बहुत प्यास लगने, शरीर जलन होने पर केला खाना चाहिए।

केला से किसे करना चाहिए परहेज

आयुर्वेद के मुताबिक, केला कफ दोष को बढ़ा देता है। इसलिए जिनका कफ ज्यादा है, उन्हें केला गलती से भी नहीं खाना चाहिए। क्योंकि कफ के बढऩे से जठराग्नि कमजोर है तो यह उसे स्लो कर देगा। अगर किसी की चर्बी ज्यादा है, खांसी-जुकाम की समस्या है और कोई दमा का मरी है तो उसे केला नहीं खाना चाहिए।

अभिभावक बच्चों की तुलना न करें

कई बार अभिभावक दूसरे बच्चों की प्रतिभा से प्रभावित होकर कभी-कभी अपने बच्चों की तुलना दूसरे बच्चों से कर बैठते हैं। उनको इसका भान नहीं होता कि उनके इस रवैये का प्रभाव आपके बेटी-बेटे के नाजुक मानस पटल पर कितना हानिकारक प्रभाव पड़ता है। वह हीनभावना का शिकार हो जाता है जिससे वह सारी जिंदगी उभर नहीं पाता।

पड़ोसी की बेटी ज्यादा अंक परीक्षा में ले ले तो आपको अपनी बेटी को कम नहीं समझना चाहिए। अपने बच्चों को आगे बढने की प्रेरणा प्रोत्साहन जरूर दें लेकिन दूसरों से उनकी तुलना मत करें। हर व्यक्ति का आई क्यू, स्वभाव, रासायनिक एवं जैविक रचना अलग-अलग होती है। हर बच्चे का स्वभाव अलग होता है। दो व्यक्ति एक जैसे कभी नहीं हो सकते। सभी बच्चों का स्वभाव अलग होता है। बच्चों को समझ कर, उनकी प्रतिभा जिस क्षेत्र में है यह जानकर उसे उस क्षेत्र में मेहनत करने का प्रोत्साहन दें?

माता-पिता बच्चे के लिए भगवान से बढ़कर होते हैं। एक मां सौ शिक्षकों से बढ़कर होती है। जीवन का पहला संगीत मां की लोरी होती है। माता-पिता और बच्चों में पीढ़ी का अंतर तो होता ही है फिर भी समझदार मां-बाप को यथा समय इस अंतर को कम कर देना चाहिए। बच्चों से उनके जवान होने पर मित्रवत व्यवहार करें।

बच्चों के गुणों की प्रशंसा करें, उनकी कमियों को प्यार से उन्हें बताकर दूर करने का प्रयास करें। हर बच्चा प्रकृति का अनुपम प्रसाद है। माता-पिता और अध्यापकों का उसके व्यक्तित्व विकास में बहुत योगदान होता है। हर बच्चा अपना अलग स्वभाव रखता है। उसकी प्रतिभा पहचान कर उसे उसी रूप में ढालने का प्रयत्न करें। उसकी दूसरों के साथ तुलना मत करें। उसको डांट फटकार कर हतोत्साहित मत कर दें जिससे फिर वह जिंदगी में उठ ही न सके। इससे कई बार निराश हो कर बच्चे अवसाद का शिकार तक हो जाते हैं। यहां तक कि खुदकुशी तक कर लेते हैं, इसलिए हालत को समझकर ही उन्हें समझायें।

शब्द सामर्थ्य -087

(भागवत साहू)

बाएं से दाएं :

1. पानी, नीर, अंबु 2. आना-जाना, आवागमन 5. बहुत, बढ़िया 6. दूर रहने वाला (घटना) जो वर्तमान में न घट सके 8. अबोध, नासमझ, अनाड़ी 10. सब्जी, शाक 11. निशान, उद्देश्य, अनुमान योग्य वस्तु 12. नाखून 13. द्रव पदार्थ 15. सूनसान, जनविहीन स्थान 16. चटकीला, चमकीला, चटपटा, गौरेया 18. भगवान, खुदा 19. इन दिनों, वर्तमान दिनों में 20. अग्नि, पावक 21. अन्नकण, अनाज का टुकड़ा 22. टालमटोल, बहाने बाजी 24. भैया की पत्नी 25. पांच से छोटी एक विषम संस्था 26. हत्या, कत्ल.

ऊपर से नीचे

1. दुनिया, संसार, ठोस रूप में परिवर्तित करना 2. चमक, पानी 3. बाजीगर, जादू का खेल दिखाने वाला 4. एक पंजाबी प्रेमगीत, रांझा की प्रेमिका 5. मार-काट, खून-कत्ल 7. भूमि, जमीन, भू-भाग 9. बहुत बड़ा दानी, 10. संगीत के सुरों की संख्या 14. लचीला, लोचयुक्त 17. खिसकना, अपने स्थान से हटना, विचलित होना 19. प्रवेश करना, पधारना, आना 20. धूप-दीप से पूजा 22. इसी समय 23. गुस्सा, कहर.

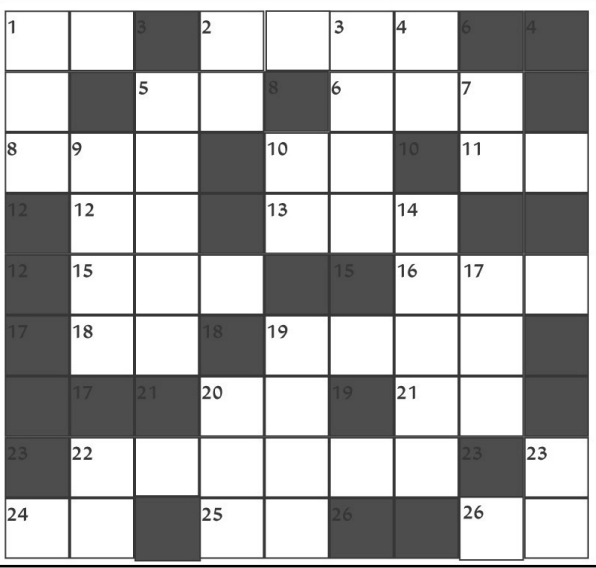

शब्द सामर्थ्य क्रमांक 86 का हल

स्वा	द		सा	म	ना		कै	दी
व		ख	ल	ना	य	क		वा
लं	प	ट		ना	क	क	ट	ना
बी		प				ड़ी		प
	अ	ट	प	टा			शा	न
स	ह		यो			र	ति	
ह	म		द	र	ब	द	र	
म	क	र		सी	ल			
त		क्षा		द	वा	खा	ना	

मस्कारा खरीदने से पहले इन बातों का रखें ध्यान, मिलेगा सही विकल्प

मस्कारा एक ऐसी सुंदरता बढ़ाने वाली चीज़ है, जो आंखों की खूबसूरती को बढ़ाने में मदद करती है। सही मस्कारा चुनना थोड़ा मुश्किल हो सकता है क्योंकि बाजार में कई तरह के विकल्प उपलब्ध हैं। ऐसे में आपको कुछ खास बातों का ध्यान रखना चाहिए ताकि आप अपने लिए सबसे अच्छा मस्कारा चुन सकें। इस लेख में हम आपको मस्कारा खरीदते समय ध्यान देने योग्य 5 अहम बातें बताएंगे, जो आपकी मदद करेंगी। अपनी पलकों के प्रकार को समझें- मस्कारा खरीदते समय सबसे पहले अपनी पलकों के प्रकार को समझना जरूरी है। अगर आपकी पलकें पतली और हल्की हैं तो घना दिखाने वाला मस्कारा चुनें। इससे आपकी पलकें भरी-भरी दिखेंगी, वहीं अगर आपकी पलकें पहले से ही लंबी और घनी हैं तो आपको लंबाई बढ़ाने वाला मस्कारा चाहिए होगा। यह आपकी पलकें और भी ज्यादा आकर्षक बनाएगा और आपके लुक को खास बनाएगा।

ब्रश की बनावट पर ध्यान दें- मस्कारा खरीदते समय ब्रश की बनावट पर खास ध्यान देना चाहिए क्योंकि इसका असर आपके लुक पर पड़ता है। अगर आप घने ब्रश वाले मस्कारा का इस्तेमाल करेंगे तो यह आपकी पलकें को अच्छी तरह से कोट करेगा और उन्हें अलग-अलग करेगा। वहीं अगर ब्रश पतला होता है तो यह आपकी पलकें को लंबा और घना बनाएगा। इसलिए अपनी जरूरत अनुसार ब्रश की बनावट चुनें ताकि आपका लुक बेहतरीन लगे।

जलरोधी या सामान्य का चयन करें- मस्कारा खरीदते समय यह तय करना जरूरी है कि आपको पानी से बचाने वाला मस्कारा चाहिए या सामान्य। पानी से बचाने वाला मस्कारा बारिश, पसीने या आंसुओं से बचाता है और पूरे दिन चलता रहता है, वहीं सामान्य मस्कारा आसानी से साफ हो जाता है और त्वचा पर हल्का महसूस होता है। अगर आप रोजाना मेकअप करते हैं तो पानी से बचाने वाला मस्कारा बेहतर रहेगा क्योंकि यह लंबे समय तक टिकता है और ब्लेंडिंग में भी मदद करता है।

रंग का चयन करें- मस्कारा खरीदते समय रंग का चयन भी अहम होता है। काला रंग हमेशा सुरक्षित विकल्प होता है क्योंकि यह हर प्रकार की त्वचा पर सूट करता है और आंखों को खास लुक देता है। हालांकि, अगर आप कुछ नया आजमाना चाहते हैं तो भूरा या नीला जैसे रंग भी अच्छे लग सकते हैं। ये रंग आंखों को अलग अंदाज देते हैं और आपके लुक को खास बनाते हैं।

ब्रांड पर ध्यान दें- अंतिम लेकिन अहम बात यह है कि मस्कारा खरीदते समय ब्रांड पर ध्यान देना चाहिए। हमेशा किसी प्रसिद्ध ब्रांड का मस्कारा चुनें जो अच्छी गुणवत्ता और भरोसेमंद हो। इससे आपको बेहतर परिणाम मिलेंगे और आपकी आंखें खूबसूरत दिखेंगी। इन 5 बातों का ध्यान रखकर आप अपने लिए सही मस्कारा चुन सकते हैं जो आपकी आंखों को सबसे अच्छा लुक देगा।

प्राणायाम को अपने रूटीन का बनाएं हिस्सा, मिलेंगे ये 5 स्वास्थ्य लाभ

प्राणायाम योग का एक अहम हिस्सा है, जो सांस की गति पर ध्यान केंद्रित करके शरीर और मन को संतुलित करता है। यह न केवल शारीरिक बल्कि मानसिक सेहत के लिए भी फायदेमंद है। प्राणायाम के अलग-अलग तरीके जैसे अनुलोम-विलोम, कपालभाति, भ्रामरी आदि का नियमित अभ्यास करने से शरीर में ऑक्सीजन की मात्रा बढ़ती है और तनाव कम होता है। आइए आज हम आपको प्राणायाम के अभ्यास से मिलने वाले स्वास्थ्य लाभों के बारे में बताते हैं।

तनाव को कम करने में है सहायक- प्राणायाम का नियमित अभ्यास तनाव को कम करने में बहुत मदद कर सकता है। जब हम गहरी सांस लेते हैं तो हमारे शरीर में ऑक्सीजन की मात्रा बढ़ जाती है, जो हमारे दिमाग को शांत और संतुलित रखती है। इसके अलावा यह हमारी मानसिक स्थिति को भी सुधारता है और हमें अधिक सकारात्मक महसूस कराता है। प्राणायाम से हमारा ध्यान केंद्रित होता है और हम अपनी चिंताओं से दूर रहते हैं, जिससे तनाव का स्तर कम होता है।

पाचन क्रिया को कर सकता है सुधार- प्राणायाम का नियमित अभ्यास पाचन क्रिया के लिए बहुत फायदेमंद होता है। गहरी सांस लेने से हमारे पेट में ऑक्सीजन की मात्रा बढ़ती है, जो पाचन रसों के उत्पादन को बढ़ाती है और हमारी आंतों को स्वस्थ रखती है। इसके अलावा प्राणायाम से हमारी आंतों की मांसपेशियों में मजबूती आती है, जिससे खाना आसानी से पचता है। नियमित प्राणायाम से कब्ज, गैस जैसी समस्याओं से भी राहत मिलती है और हमारा पाचन तंत्र बेहतर तरीके से काम करता है।

रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ावा देने में है कारगर- प्राणायाम रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाने में भी मदद करता है। नियमित रूप से प्राणायाम करने से हमारे शरीर की रक्त संचार प्रणाली बेहतर होती है, जिससे पोषक तत्वों और ऑक्सीजन का वितरण पूरे शरीर में सही तरीके से होता है। इसके अलावा प्राणायाम से हमारी श्वसन प्रणाली भी मजबूत होती है, जिससे हम आसानी से सांस ले पाते हैं और हमारी रोग प्रतिरोधक क्षमता बेहतर होती है। इससे हमारा शरीर संक्रमण और बीमारियों से लडने में सक्षम बनता है।

नींद की गुणवत्ता हो सकती है सुधार- प्राणायाम नींद की गुणवत्ता सुधारने में भी मददगार साबित हो सकता है। रात को सोते समय अगर हम कुछ मिनट तक हल्की सांस लेते रहें तो हमारी नींद गहरी होती जाती है और सुबह ताजगी महसूस होती है। प्राणायाम से हमारा मन शांत होता है और हम बेहतर तरीके से आराम कर पाते हैं। इसके अलावा प्राणायाम से हमारी श्वसन प्रणाली भी मजबूत होती है, जिससे हम आसानी से सांस ले पाते हैं।

निकिता दत्ता ने फिल्म कबीर सिंह को बताया करियर का टर्निंग प्वाइंट

शाहिद कपूर की कबीर सिंह को रिलीज हुए सात साल पूरे हो चुके हैं। इस मौके पर फिल्म का हिस्सा रहीं एक्ट्रेस निकिता दत्ता ने अपने करियर पर इस फिल्म के लंबे समय तक रहने वाले असर के बारे में बात की। उन्होंने कहा कि इस फिल्म ने इंडस्ट्री में उनके बारे में लोगों की सोच बदल दी और बॉलीवुड में लीड रोल पाने का रास्ता बनाया। निकिता ने कबीर सिंह' को अपने करियर का बड़ा टर्निंग पॉइंट बताया। फिल्म ने उनके करियर पर कैसे असर डाला इस बारे में बात करते हुए एक्ट्रेस ने कहा कि कबीर सिंह मुझे तब मिली जब मैं फिल्मों में अपनी जगह बनाने की कोशिश कर रही थी। कबीर सिंह के बाद कास्टिंग के मामले में मुझे अलग नजरिए से देखा जाने लगा। मैंने लीड रोल वाली अपनी पहली दो फिल्में साइन कीं। इस फिल्म ने मुझे वह बदलाव दिया जिसकी मुझे जरूरत थी।

फिल्म में शाहिद कपूर के साथ काम करने के अपने अनुभव को निकिता ने साझा किया। उन्होंने कहा कि यह फिल्म ऐसी थी, जिसे लोगों ने बहुत पसंद किया और जिस पर काफी चर्चा हुई। हालांकि, फिल्म की शूटिंग के दौरान कभी भी फाइनल रिजल्ट के बारे में नहीं सोचा। मैंने फिल्म को दिन-दर-दिन के हिसाब से किया। बस हर सीन में जो कर सकती थी, वह करने की कोशिश की। यह वांगा सर का विजन था जिसकी वजह से ऐसा रिजल्ट मिला। शूटिंग के दौरान शाहिद का फोकस तारीफ के काबिल था।

निकिता जल्द ही नजदीकियां में मुख्य भूमिका निभाती नजंर आएंगी। यह प्राइम वीडियो इंडिया की आने वाली सीरीज है, जिसे धर्माटिक एंटरटेनमेंट ने प्रोड्यूस किया है। यह प्रोजेक्ट धर्माटिक के साथ उनका पहला कोलेबोरेशन है।

धर्माटिक करण जौहर का डिजिटल कंटेंट डिवीजन है। सीरीज से जुड़ने के बारे में बात करते हुए दत्ता ने कहा कि मुझे लगता है कि करण जौहर आज के समय में फैमिली-रोमकॉम के जीनियस हैं। जब से मैंने एक्टिंग शुरू की है, उनकी ड्रामेडी का हिस्सा बनना मेरे लिए एक सपना सच होने जैसा है। जब मुझे यह ऑफर मिला, तो इसे ठुकराने का कोई सवाल ही नहीं था।

आज के दौर के रिश्तों पर आधारित ड्रामा नजदीकियां में निकिता मुख्य भूमिका में हैं। उनके साथ परेश पाहुजा, आकांक्षा सिंह और ताहा शाह भी हैं।

जैकलीन फर्नांडीज हॉरर फिल्म में आएंगी नजर

फर्नांडीज जल्द ही अपनी पहली पूर्ण हॉरर फिल्म के साथ इस शैली में कदम रखने जा रही हैं। अभिनेत्री काफी समय से इस जॉनर में एक मजबूत और अलग कहानी की तलाश में थीं और अब उन्हें ऐसा प्रोजेक्ट मिल गया है जिसने उन्हें बेहद उत्साहित कर दिया है।

सूत्रों के अनुसार, यह फिल्म हॉरर, इमोशन और म्यूजिक का बेहतरीन मिश्रण होगी, जो दर्शकों को एक संपूर्ण सिनेमाई अनुभव देगी। फिल्म में जैकलीन मुख्य भूमिका निभाएंगी, जबकि दो मेल एक्टर्स को पहले ही फाइनल किया जा चुका है। फिलहाल फिल्म का टाइटल, अन्य कलाकारों के नाम और निर्देशक की जानकारी गुप्त रखी गई है।

इस फिल्म का निर्माण ख्याति मदान के बैनर नॉट आउट एंटरटेनमेंट के तहत बड़े स्तर पर किया जाएगा। फिल्म की आधिकारिक घोषणा जल्द ही होने की उम्मीद है।

सूत्रों का यह भी कहना है कि फिल्म का एक टीज़र और एक गाना पहले ही शूट किया जा चुका है, जबकि कलाकार इन दिनों वर्कशॉप्स में हिस्सा ले रहे हैं। फिल्म की शूटिंग इस महीने के अंत तक शुरू होने की संभावना है।दिलचस्प बात यह है कि जैकलीन इससे पहले भूत पुलिस में नजर आ चुकी हैं, लेकिन वह एक हॉरर-कॉमेडी फिल्म थी। यह नई फिल्म उनके करियर की पहली पूरी तरह हॉरर फिल्म होगी।

बारिश में गिरती जा रही रोडवेज डिपो की आय

रुड़की(आरएनएस)। लगातार हो रही बारिश का असर रुड़की रोडवेज डिपो की आय पर भी पड़ने लगा है। बारिश के चलते यात्रियों की संख्या में कमी आने से रोडवेज को हर दिन करीब दो से तीन लाख रुपये तक का आर्थिक नुकसान उठाना पड़ रहा है। लगातार गिरती आय को लेकर रोडवेज कर्मचारियों में भी चिंता बढ़ गई है। रुड़की रोडवेज डिपो में वर्तमान समय में करीब 44 बसों का संचालन किया जा रहा है। सामान्य दिनों में डिपो की प्रतिदिन की औसत आय करीब साढ़े सात से आठ लाख रुपये के आसपास रहती है, लेकिन एक जुलाई से स्कूल खुलने और यात्रा सीजन में कमी आने के बाद यात्रियों की संख्या में गिरावट शुरू हो गई थी।इसके बाद लगातार हो रही बारिश ने निगम की परेशानी और बढ़ा दी है। रोडवेज अधिकारियों के अनुसार पिछले कुछ दिनों में डिपो की आय लगातार कम हुई है। छह जुलाई को डिपो की आय करीब साढ़े छह लाख रुपये रही थी, जो इसके बाद घटकर पांच लाख और फिर चार लाख रुपये तक पहुंच गई। वहीं एक दिन पहले आय तीन लाख रुपये के आसपास भी दर्ज की गई है। कर्मचारियों का कहना है कि बरसात के मौसम में लोग जरूरी काम होने पर ही यात्रा कर रहे हैं। इसके अलावा स्कूल खुलने के बाद भी बसों में यात्रियों की संख्या प्रभावित हुई है। यदि आने वाले दिनों में बारिश जारी रही और आय में सुधार नहीं हुआ तो निगम के सामने आर्थिक चुनौतियां और बढ़ सकती हैं।

किसानों को मुफ्त में बांटे जा रहे तिमूर के पौधे

विकासनगर(आरएनएस)। प्रदेश में सुगंधित एवं औषधीय पौधों की खेती को बढ़ावा देने तथा किसानों की आय बढ़ाने के उद्देश्य से परफ्यूमरी एवं सुगंध अनुसंधान एवं विकास संस्थान सेलाकुई की ओर से विशेष अभियान चलाया जा रहा है। अभियान के तहत जनपद पिथौरागढ़ के सीमांत एवं पर्वतीय क्षेत्रों के किसानों को तिमूर के पौधे निशुल्क वितरित किए जा रहे हैं। तिमूर उत्तराखंड के पर्वतीय क्षेत्रों की एक महत्वपूर्ण औषधीय एवं सुगंधित प्रजाति है। इसके बीज और तेल की मांग फार्मास्यूटिकल, कॉस्मेटिक और परफ्यूम उद्योग में लगातार बढ़ रही है। इसी को देखते हुए डाबर इंडिया लिमिटेड और पारडी के बीच एमओयू किया गया है। डाबर इंडिया के प्रतिनिधि डॉ. पंकज रतूड़ी के अनुसार कंपनी की नर्सरी से करीब 2० हजार उच्च गुणवत्ता वाले तिमूर के पौधे पारडी को उपलब्ध कराए जाएंगे। संस्थान ने 1० जुलाई 2०26 से किसानों के खेतों तक पौधे पहुंचाने का अभियान शुरू कर दिया है। प्रथम चरण में पिथौरागढ़ जिले के मुनस्यारी, धारचूला, विण, कनालीछीना, डीडीहाट, गंगोलीहाट और मूनाकोट विकासखंडों में लगभग 2० हेक्टेयर क्षेत्रफल में तिमूर की खेती कराई जाएगी। संस्थान के निदेशक डॉ. नृपेन्द्र चौहान ने बताया कि योजना का उद्देश्य किसानों को पारंपरिक खेती के साथ उच्च मूल्य वाली सुगंधित फसलों से जोड़कर उनकी आय बढ़ाना है। उन्होंने कहा कि सीमांत क्षेत्रों में जंगली जानवरों की समस्या और पलायन जैसी चुनौतियों के बीच तिमूर की खेती किसानों के लिए बेहतर और सुरक्षित आजीविका का माध्यम बन सकती है।

सू- दोकू क्र.087

	7				1		3	
1		9				5		
			3				1	
		5						3
3					2		5	
				3				2
	4						7	
7		8		1		6		
	6		7		9			1

नियम

1. कुल 81 वर्ग है,जिसमें 9वर्गो का एक खंड बनता है।
2. हर खाली वर्ग में 1से 9 के बीच का कोई एक अंक र सकते है।
3. बाएं से दाएं और उपर से नीचे के प्रत्येक कालम,कतार और खंड में 1से9अंक में से किसी भी अंक का इस्तेमाल एक बार ही कर सकते है।

सू-दोकू क्र.86 का हल

5	2	4	9	6	7	8	1	3
3	6	7	4	1	8	2	9	5
8	1	9	3	2	5	4	6	7
6	3	5	1	9	4	7	2	8
7	9	8	5	3	2	6	4	1
2	4	1	7	8	6	5	3	9
4	5	3	6	7	9	1	8	2
9	8	6	2	5	1	3	7	4
1	7	2	8	4	3	9	5	6

गोलूछाना में बहुउद्देशीय शिविर में 1150 से अधिक लोगों ने उठाया योजनाओं का लाभ

अल्मोड़ा (आरएनएस)। सेवा, सुशासन एवं समर्पण की भावना के अनुरूप संचालित जन-जन की सरकार, जन-जन के द्वार अभियान के तहत विकासखंड द्वाराहाट के जनता उच्चतर माध्यमिक विद्यालय गोलूछाना परिसर में बहुउद्देशीय शिविर आयोजित किया गया। शिविर में जिलाधिकारी अंशुल सिंह ने लोगों की समस्याएं सुनते हुए संबंधित अधिकारियों को उनके समयबद्ध एवं गुणवत्तापूर्ण निस्तारण के निर्देश दिए। शिविर में विभिन्न विभागों द्वारा लगाए गए स्टॉलों के माध्यम से 115० से अधिक लोगों ने सरकारी योजनाओं और सेवाओं का लाभ उठाया। आधार सेवा केंद्र पर आधार नामांकन एवं संशोधन से जुड़े कार्य किए गए, जबकि श्रम विभाग ने मौके पर ही श्रम कार्ड बनाए। अन्य विभागों ने भी विभिन्न जनोपयोगी सेवाएं उपलब्ध कराईं। विभिन्न विभागों ने पात्र लाभार्थियों को योजनाओं का लाभ भी प्रदान किया। महिला सशक्तिकरण एवं बाल विकास विभाग ने तीन लाभार्थियों को महालक्ष्मी किट वितरित की। डेयरी विकास विभाग ने छह पशुपालकों को स्वच्छ दुग्ध उत्पादन किट उपलब्ध कराई। वहीं मत्स्य विभाग ने दो लाभार्थियों को मत्स्य तालाब निर्माण एवं सुधार कार्यों के लिए एक लाख रुपये से अधिक की स्वीकृति के चेक वितरित किए। शिविर में पहुंचे बागवानी विकास परिषद के उपाध्यक्ष देवेंद्र सिंह ढेला ने कहा कि सरकार अब स्वयं गांवों तक पहुंचकर लोगों को योजनाओं का लाभ दिला रही है। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी के नेतृत्व में संचालित जन-जन की सरकार, जन-जन के द्वार अभियान के तहत लगाए जा रहे बहुउद्देशीय शिविर ग्रामीण क्षेत्रों के लोगों के लिए बेहद लाभकारी साबित हो रहे हैं। जिलाधिकारी अंशुल सिंह ने कहा कि ग्रामीण क्षेत्रों में आयोजित इन शिविरों का उद्देश्य लोगों को उनके घर के निकट ही सरकारी योजनाओं और सेवाओं का लाभ उपलब्ध कराना तथा उनकी समस्याओं का प्रभावी समाधान सुनिश्चित करना है। उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दिए कि शिविर केवल औपचारिकता तक सीमित न रहें, बल्कि उनका वास्तविक लाभ अंतिम छोर पर खड़े व्यक्ति तक पहुंचे। साथ ही शिविर में प्राप्त सभी शिकायतों का प्राथमिकता के आधार पर समयबद्ध एवं गुणवत्तापूर्ण निस्तारण सुनिश्चित किया जाए। शिविर के दौरान कुल 96 शिकायतें दर्ज की गईं, जिनमें से अधिकांश का मौके पर ही निस्तारण कर दिया गया, जबकि शेष शिकायतों को संबंधित विभागों को कार्रवाई के लिए भेजा गया। इस अवसर पर उत्तराखंड पलायन निवारण आयोग के सदस्य अनिल सिंह साही, उपजिलाधिकारी द्वाराहाट सुनील कुमार राज, परियोजना निदेशक डीआरडीए के.एन. तिवारी, खंड विकास अधिकारी निवेदिता खुल्बे सहित जनप्रतिनिधि, विभागीय अधिकारी और बड़ी संख्या में स्थानीय लोग मौजूद रहे।

कांवड़ मेला-2026 के लिए पुलिस कल्याण समिति गठित

हरिद्वार(आरएनएस)। कांवड़ मेला-2026 को सुरक्षित, सुव्यवस्थित और सकुशल संपन्न कराने के लिए हरिद्वार पुलिस ने ड्यूटी पर तैनात पुलिस कर्मियों के कल्याण और आवश्यक सुविधाओं के बेहतर समन्वय हेतु पुलिस कल्याण समिति का गठन किया है। एसपी सिटी अभय सिंह को समिति का नोडल अधिकारी नियुक्त किया गया है, जो मेले के दौरान पुलिस कर्मियों से जुड़ी व्यवस्थाओं की निगरानी और समन्वय सुनिश्चित करेंगे। पुलिस की ओर से गठित पुलिस कल्याण समिति में क्षेत्राधिकारी सदर/लाइन सुरेंद्र प्रसाद बलूनी, प्रतिसार निरीक्षक पुलिस लाइन प्रवीण आलोक, प्रभारी निरीक्षक कोतवाली भगवानपुर रितेश शाह तथा थाना प्रभारी सिडकुल अजय शाह को सदस्य बनाया गया है।

पहली बारिश में उधड़ी सड़कें, हाईवे सर्विस लेन पर गड्ढों से बढ़ी परेशानी

हरिद्वार (आरएनएस)। तेज बारिश के बाद हरिद्वार शहर की कई प्रमुख सड़कें और राष्ट्रीय राजमार्ग की सर्विस लेन जगह-जगह उखड़ गईं। सड़क पर बने गहरे गड्ढों में बारिश का पानी भर जाने से वाहन चालकों के लिए उनकी गहराई का अंदाजा लगाना मुश्किल हो गया है। सबसे अधिक परेशानी दोपहिया वाहन चालकों को उठानी पड़ रही है। कई स्थानों पर वाहन चालकों को बेहद धीमी गति से गुजरना पड़ा, जिससे दुर्घटना की आशंका भी बढ़ गई है। स्थानीय लोगों का कहना है कि सुखी नदी से सप्तऋषि चेक पोस्ट तक हाईवे की सर्विस लेन की स्थिति बेहद खराब हो चुकी है।सड़क पर बने बड़े-बड़े गड्ढों में बारिश का पानी भर जाने से उनकी गहराई का अनुमान लगाना मुश्किल हो रहा है। ऐसे में वाहन चालकों को हर कदम पर सतर्कता बरतनी पड़ रही है। स्थानीय निवासी पंकज शर्मा ने बताया कि सुखी नदी से सप्तऋषि चेक पोस्ट तक सड़क पर इतने गड्ढे हो गए हैं कि वाहन चलाना मुश्किल हो गया है। उन्होंने कहा कि रोज इस मार्ग से गुजरने के कारण कमर की डिस्क की समस्या और बढ़ गई है तथा सफर बेहद कष्टदायक हो गया है। भोमेश श्रीकुंज का कहना है कि पहली ही बारिश ने सड़क रखरखाव के दावों की हकीकत सामने ला दी है। शहर में जगह-जगह सड़कें उखड़ी और धंसी हुई दिखाई दे रही हैं। वाहन चलाते समय हर समय यह डर बना रहता है कि कहीं गड्ढे में वाहन फंसकर हादसा न हो जाए।

कैबिनेट मंत्री सौरभ बहुगुणा ने मत्स्य पालकों से किया संवाद, बांटे अनुदान के चैक

रुद्रपुर(आरएनएस)। राष्ट्रीय मत्स्य पालक दिवस पर शक्तिफार्म में आयोजित कार्यक्रम में कैबिनेट मंत्री सौरभ बहुगुणा ने मत्स्य पालकों से संवाद किया। उन्होंने आठ मत्स्य पालकों को अनुदान के चेक वितरित किए और मत्स्य पालन को डिजिटल तकनीक से जोड़ने के लिए आईएचएमएस पोर्टल का शुभारंभ किया। कार्यक्रम में विभिन्न विभागों की ओर से स्टॉल भी लगाए गए।

कैबिनेट मंत्री ने मत्स्य पालकों, महिलाओं, युवाओं, किसानों और ग्रामीणों से स्वरोजगार के अवसरों का लाभ लेने की अपील की। उन्होंने कहा कि केंद्र और प्रदेश सरकार की योजनाओं के माध्यम से लोगों को आय बढ़ाने के अवसर उपलब्ध कराए जा रहे हैं। मत्स्य पालन क्षेत्र में सरकार 6० प्रतिशत तक अनुदान दे रही है, जिससे ग्रामीण युवा और महिलाएं भी इस व्यवसाय से जुड़कर आत्मनिर्भर बन सकते हैं। बहुगुणा ने कहा कि पहली बार उत्तराखंड के मत्स्य क्षेत्र ने अंतरराष्ट्रीय बाजार में कदम रखते हुए नया इतिहास रचा है। पिथौरागढ़ की तीन मत्स्य सहकारी समितियों ने पांच मीट्रिक टन मछली का निर्यात किया, जिससे 33 मत्स्य पालकों को करीब 23.5० लाख रुपये का आर्थिक लाभ मिला। सरकार अब 3० मीट्रिक टन मछली के निर्यात की तैयारी कर रही है। इससे मत्स्य पालकों की आय बढ़ेगी, निर्यात के नए अवसर खुलेंगे और ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूती मिलेगी।

उन्होंने कहा कि आईटीबीपी के साथ मत्स्य, भेड़, पशु और दुग्ध उत्पादों की खरीद के लिए हुए करार का सीधा लाभ किसानों को मिल रहा है। किसानों को 48 घंटे के भीतर भुगतान किया जा रहा है। बीते डेढ़ वर्ष में आईटीबीपी ने करीब 11 करोड़ रुपये के उत्पाद खरीदे हैं। मंत्री ने बताया कि सितारगंज में राज्य के पहले एक्वापार्क और थोक बाजार का निर्माण जल्द पूरा होगा। वहां प्रोसेसिंग यूनिट शुरू होने के बाद मत्स्य उत्पादकों को बेहतर बाजार उपलब्ध होगा। उन्होंने कहा कि पिछले चार वर्षों में राज्य में मछली उत्पादन की वृद्धि दर दो प्रतिशत से बढ़कर 11 प्रतिशत हो गई है। वर्ष 2०22 में मत्स्य विभाग का बजट 55 करोड़ रुपये था, जो 2०26 में बढ़कर 278 करोड़ रुपये हो गया है। यहां दर्जाधारी उत्तम दत्ता व सीमा चौहान, निदशेक चंद्र सिंह धर्मसत्तू, उप निदेशक अनिल कुमार व पीके शुक्ला, सहायक निदेशक संजय कुमार छिम्वाल, ब्लॉक प्रमुख उपकार सिंह बल, दुग्ध संघ अध्यक्षा प्रभा रावत, नगर पंचायत अध्यक्ष सुमित मण्डल, योगेंद्र सिंह रावत, अमरजीत कटवाल, गुरजीत सिंह, गोविंद तालुकदार, संजय बाछाड़, केपी मण्डल, कार्तिक राय, शिखा हाल्दार, राजेंद्र डसीला, मयंक अग्रवाल मौजूद रहे।

ग्रेड पे की मांग को लेकर पुलिस परिवारों का पुलिस मुख्यालय कूच

संवाददाता

देहरादून। 4600 रूपये ग्रेड पे की मांग को लेकर पुलिस परिवारों ने पुलिस मुख्यालय के लिए कूच किया और पुलिस अधिकार मार्च निकाला। जहां उनको बैरकेडिंग लगाकर रोक दिया। जिसके बाद वह वहीं धरने पर बैठ गये। आज यहां पुलिस परिवार के लोग परेड ग्राउंड में एकत्रित हुए। जहां से उन्होंने पुलिस मुख्यालय के लिए कूच किया। जब वह कनक चौक के करीब पहुंचे तो पुलिस ने बैरकेडिंग लगाकर उनको रोक दिया। जिसके बाद वह वहीं धरने पर बैठ गये। उनका कहना था कि पुलिस के अधिकार, सम्मान और भविष्य की रक्षा के लिए 4600 पे ग्रेड दिया जाये उनका कहना था कि 4600 रूपये ग्रेड पे उनका अधिकार व उनका सम्मान चाहिए। उनका कहना था कि पुलिस के अधिकार सुनिश्चित किये जायें। उनका कहना था कि 4600 पे ग्रेड तुरन्त लागू किया जाना चाहिए। इस दौरान उन्होंने हाथ में तख्ती पकडी हुई थी जिसमें उन्होंने अधिकार हमार सम्मान हमारा, हमारा हक हमें दो, 4600 पे ग्रेड हमारा अधिकार, सेवा हमारी सम्मान हमारा तथा न्याय नहीं तो संघर्ष तय के नारों के साथ प्रदर्शन किया। इस दौरान कुछड सामाजिक एवं राजनीतिक संगठनों ने भी इनके प्रदर्शन को अपना समर्थन दिया।

सफाई कर्मचारी यूनियन ने नगर आयुक्त को सौंपा ज्ञापन

संवाददाता

देहरादून। राष्ट्रीय सफाई कर्मचारी मजदूर यूनियन के प्रदेश अध्यक्ष / संरक्षक चौधरी नरेश वैध के नेतृत्व में नगर निगम सफाई कर्मचारी यूनियन के अध्यक्ष सोनू खैरवाल व सचिव धीरज भारती ने पर्यावरण मित्रों की 6 सूत्रीय मांग पत्र नगर आयुक्त आलोक कुमार पाण्डे को सौंपा। जिसमे मांग दैनिक वेतन संविदा नवरात्रि जन को स्थाई करने की मांग पर्यावरण मित्रों को जमीन आवंटन की मांग मित्रों की स्थाई भर्ती की मांग आदि समस्याओं के लिए 3 दिन का धरने का अल्टीमेटम के साथ ज्ञापन सोपा गया। इस मौके पर यूनियन के उपाध्यक्ष विनोद कुमार , राष्ट्रीय सफाई कर्मचारी मजदूरी यूनियन महिला बैंक की महानगर देहरादून अध्यक्ष कुमारी आरती, जागराज, छाया देवी, सोहन लाल, अरुण कुमार, तेजपाल, पप्पू, जीवन, प्रकाश चंद, अरविंद कुमार, लक्ष्मण आदि सैकड़ों पर्यावरण मित्र शामिल थे।

उत्तराखंड भाजपा का चुनावी 'ब्लूप्रिंट'... ◀◀ पृष्ठ 2 का शेष

संपर्क अभियानों को इसके लिए प्रमुख साधन माना जा रहा है।

संगठन को मिला यह रोडमैप जितना मजबूत कागज पर दिखता है, उसकी वास्तविक परीक्षा टिकट वितरण और चुनावी मैदान में होगी। यदि टिकट चयन के दौरान असंतोष बढ़ता है या स्थानीय समीकरण बिगड़ते हैं, तो मजबूत संगठन भी दबाव में आ सकता है। वहीं यदि पार्टी समय रहते इन चुनौतियों का समाधान कर लेती है, तो यही संगठन उसकी सबसे बड़ी चुनावी पूंजी साबित हो सकता है। उत्तराखंड की राजनीति में 2027 का चुनाव केवल भाजपा बनाम कांग्रेस की लड़ाई नहीं होगा। यह सरकार के प्रदर्शन बनाम संगठन की ताकत, स्थानीय मुद्दों बनाम राष्ट्रीय नेतृत्व और जनता की अपेक्षाओं बनाम चुनावी प्रबंधन की भी परीक्षा होगी। भाजपा ने अपने संगठन को चुनावी कमान सौंपकर यह संकेत दे दिया है कि वह हर बूथ को रणभूमि और हर कार्यकर्ता को चुनावी योद्धा मानकर आगे बढ़ना चाहती है। अब देखना यह होगा कि यह रणनीति मतदान केंद्रों तक कितनी प्रभावी साबित होती है।

सत्ता की 'हैट्रिक' रोकने को कांग्रेस... ◀◀ पृष्ठ 2 का शेष

का चेहरा कौन होगा। फिलहाल पार्टी सामूहिक नेतृत्व की बात कर रही है, लेकिन चुनाव नजदीक आने के साथ नेतृत्व का प्रश्न और प्रमुख हो सकता है। पार्टी की कोशिश है कि यह बहस संगठन को कमजोर करने के बजाय चुनावी तैयारी के बाद के चरण में ही सामने आए। राजनीतिक दृष्टि से 2027 का विधानसभा चुनाव उत्तराखंड कांग्रेस के लिए बेहद महत्वपूर्ण माना जा रहा है। लगातार तीसरी हार पार्टी के मनोबल और संगठन दोनों पर गहरा असर डाल सकती है, जबकि जीत या मजबूत प्रदर्शन उसे राज्य की राजनीति में नई ऊर्जा दे सकता है। इसीलिए पार्टी अभी से गांव-गांव पहुंचने, कार्यकर्ताओं को सक्रिय करने और जनता के बीच अपनी राजनीतिक उपस्थिति मजबूत करने में जुटी है।

उत्तराखंड की राजनीति में भाजपा चुनावी मशीनरी को मजबूत करने में जुटी है, जबकि कांग्रेस अपने बिखरे संगठन को फिर से खड़ा करने की कोशिश कर रही है। आने वाले महीनों में असली मुकाबला केवल सरकार बनाम विपक्ष का नहीं होगा, बल्कि बूथ बनाम बूथ, संगठन बनाम संगठन और जनसंपर्क बनाम जनसंपर्क का भी होगा। कांग्रेस ने 2027 की लड़ाई का शंखनाद समय से पहले कर दिया है। अब सबसे बड़ा सवाल यही है कि क्या परिवर्तन यात्राओं से निकली राजनीतिक ऊर्जा मतदान केंद्रों तक पहुंच पाएगी या फिर यह तैयारी भी पिछले चुनावों की तरह संगठनात्मक कमजोरियों के बोझ तले दब जाएगी। इसका जवाब आने वाले महीनों में पार्टी की एकजुटता, जमीनी सक्रियता और जनता के बीच उसकी स्वीकार्यता तय करेगी।

'चुनावी दहलीज' पर फिर खुली 'पुरानी फाइल'

कार्यालय संवाददाता

देहरादून। उत्तराखंड की सत्ता के गलियारों में इन दिनों एक पुराना नाम फिर फुसफुसाहटों में सुनाई देने लगा है देवस्थानम बोर्ड। आधिकारिक तौर पर यह अध्याय वर्षों पहले बंद हो चुका है, लेकिन राजनीतिक गलियारों में चर्चा है कि चारधाम यात्रा, मंदिर प्रबंधन और प्रशासनिक जवाबदेही से जुड़ा कोई भी बड़ा विवाद सामने आते ही यह मुद्दा फिर बहस के केंद्र में आ जाता है। राजनीतिक सूत्रों का कहना है कि 2027 के विधानसभा चुनाव से पहले भाजपा और विपक्ष, दोनों इस विषय की संवेदनशीलता को अच्छी तरह समझते हैं। यही वजह है कि सार्वजनिक बयान बेहद सावधानी से दिए जा रहे हैं, जबकि अंदरखाने चारधाम से जुड़े हर घटनाक्रम पर लगातार नजर रखी जा रही है।

हाल के वर्षों में चारधाम यात्रा के दौरान भीड़ प्रबंधन, यात्रा व्यवस्थाओं, मंदिर प्रशासन, चढ़ावे की पारदर्शिता और विभिन्न प्रशासनिक निर्णयों को लेकर समय-समय पर सवाल उठे हैं। इन घटनाओं के साथ राजनीतिक चर्चाओं में देवस्थानम बोर्ड का संदर्भ भी फिर उभरने लगता है। सत्ता पक्ष यह संदेश देना चाहता है कि वह धार्मिक परंपराओं का सम्मान करते हुए व्यवस्थाओं को बेहतर बनाने के पक्ष में है। दूसरी ओर विपक्ष यह तर्क देता है कि मंदिरों के प्रशासन और निर्णयों में अधिक पारदर्शिता तथा जवाबदेही आवश्यक है। दोनों पक्षों के बीच यही राजनीतिक खींचतान इस पुराने मुद्दे को बार-बार चर्चा में ले आती है।

भाजपा के सामने सबसे बड़ी चुनौती यह है कि चारधाम यात्रा की व्यवस्थाओं को आधुनिक बनाया जाए, लेकिन ऐसा कोई संदेश न जाए जिससे पारंपरिक अधिकारों या धार्मिक भावनाओं पर हस्तक्षेप का आरोप लगे। यही कारण है कि सरकार अब मंदिर प्रबंधन से जुड़े हर बड़े निर्णय को राजनीतिक और सामाजिक

❑चारधाम की व्यवस्था, मंदिर प्रबंधन और आस्था की राजनीति के बीच फिर हलचल
❑उत्तराखंड में सत्ता और भाजपा संगठन रख रहे हैं पूरे प्रकरण पर अपनी पैनी नजर
❑विवादों के बीच देवस्थानम बोर्ड की सुगबुगाहट, अंदरखाने रणनीतियों में जुटे दल

दोनों दृष्टियों से तौलकर आगे बढ़ाना चाहती है। पार्टी नेतृत्व यह भी समझता है कि देवभूमि उत्तराखंड में धार्मिक विषय केवल प्रशासनिक मुद्दा नहीं, बल्कि जनभावनाओं से गहराई से जुड़ा प्रश्न है।

विपक्ष भी चारधाम से जुड़े किसी भी विवाद को केवल प्रशासनिक चूक तक सीमित नहीं रखना चाहता। उसका प्रयास रहेगा कि यदि व्यवस्थाओं, पारदर्शिता या जवाबदेही पर सवाल उठते हैं, तो उन्हें व्यापक राजनीतिक विमर्श का हिस्सा बनाया जाए। हालांकि अब तक किसी प्रमुख दल ने देवस्थानम बोर्ड जैसी व्यवस्था को पुनर्जीवित करने की औपचारिक वकालत नहीं की है, लेकिन इस विषय का प्रतीकात्मक महत्व आज भी बरकरार है।

राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि चुनाव से पहले सबसे बड़ी चिंता किसी नई नीति से अधिक विश्वास की है। चारधाम से जुड़े समुदाय, हक-हकूकधारी, स्थानीय हितधारक, श्रद्धालु और सरकार इन सभी के बीच भरोसा बनाए रखना किसी भी सरकार के लिए महत्वपूर्ण होगा। यदि यात्रा प्रबंधन से जुड़े विवाद बढ़ते हैं, तो विपक्ष इसे सरकार की कार्यशैली से जोड़ने की कोशिश करेगा। वहीं यदि व्यवस्थाएं सुचारु रहती हैं, तो सत्ता पक्ष इसे अपनी प्रशासनिक क्षमता के प्रमाण के रूप में पेश करेगा।

2027 का चुनाव विकास, रोजगार और स्थानीय मुद्दों के साथ-साथ आस्था से जुड़े प्रश्नों को भी छू सकता है। देवस्थानम बोर्ड का नाम भले किसी आधिकारिक एजेंडे में न हो, लेकिन यह मुद्दा उत्तराखंड की राजनीति में एक प्रतीक बन चुका है ऐसा प्रतीक, जो मंदिर प्रबंधन, धार्मिक परंपरा और सरकारी भूमिका के बीच संतुलन पर होने वाली हर बहस में फिर सामने आ जाता है। राजनीति में कुछ फाइलें बंद नहीं होतीं, केवल अलमारी बदलती है। देवस्थानम बोर्ड भी शायद ऐसी ही फाइल है। वह आज कानून की किताब में नहीं, लेकिन राजनीतिक स्मृति में मौजूद है। इसलिए चारधाम से जुड़ा हर बड़ा घटनाक्रम उस पुराने अध्याय की याद ताजा कर देता है।

अब सवाल यह नहीं कि देवस्थानम बोर्ड वापस आएगा या नहीं, बल्कि यह है कि क्या चारधाम से जुड़े हर नए विवाद में उसका नाम फिर राजनीतिक बहस का हिस्सा बनता रहेगा? उत्तराखंड की चुनावी राजनीति में इसका जवाब आने वाले महीनों की परिस्थितियां तय करेंगी।

भाजपा-कांग्रेस के बीच 'स्पेस' की तलाश

कार्यालय संवाददाता

देहरादून। उत्तराखंड की राजनीति में पिछले दो दशकों से सत्ता का केंद्र भाजपा और कांग्रेस के बीच ही घूमता रहा है। लेकिन हर चुनाव से पहले एक सवाल जरूर उठता है, क्या इस बार कोई तीसरी ताकत उभरेगी? 2027 के विधानसभा चुनाव से पहले भी यह सवाल राजनीतिक गलियारों में गूंज रहा है। नजरें उत्तराखंड क्रांति दल और आम आदमी पार्टी पर टिकी हैं, लेकिन दोनों दलों के सामने अवसर जितना बड़ा है, चुनौती उससे कहीं अधिक कठिन दिखाई दे रही है।

उत्तराखंड राज्य आंदोलन की अग्रिम पंक्ति में रहने वाला उत्तराखंड क्रांति दल कभी पहाड़ की राजनीतिक आवाज माना जाता था। अलग राज्य की मांग को जनांदोलन बनाने में उसकी महत्वपूर्ण भूमिका रही। लेकिन राज्य बनने के बाद पार्टी धीरे-धीरे अपने जनाधार को संभाल नहीं सकी। बार-बार के नेतृत्व विवाद, संगठनात्मक बिखराव, चुनावी गठबंधनों की अस्थिरता और प्रमुख नेताओं के अन्य दलों में जाने से यूकेडी का प्रभाव लगातार सिमटता गया। आज स्थिति यह है कि राज्य आंदोलन की विरासत होने के बावजूद पार्टी विधानसभा में प्रभावी उपस्थिति दर्ज नहीं करा पा रही है। फिर भी यूकेडी के समर्थकों का मानना है कि भू-कानून, मूल निवास, जल-जंगल-जमीन, पलायन और पहाड़ की अस्मिता जैसे मुद्दों पर उसकी वैचारिक पहचान अब भी अलग है। चुनौती यह है कि क्या वह इन मुद्दों को फिर जनआंदोलन में बदल पाएगी।

दिल्ली और पंजाब की सफलता के बाद आम आदमी पार्टी ने उत्तराखंड में भी मजबूत विकल्प बनने की कोशिश की थी। शिक्षा, स्वास्थ्य, भ्रष्टाचार और मुफ्त

◆उत्तराखंड क्रांति दल और आप की साख दांव पर, क्या बदलेगा चुनावी समीकरण?
◆यूकेडी और आप बदल पाएंगे 2027 का चुनावी गणित, नई राजनीति की तलाश में आप
◆भाजपा-कांग्रेस की सीधी लड़ाई के बीच क्षेत्रीय दलों के सामने अस्तित्व बचाने की चुनौती

सेवाओं के वादों के साथ पार्टी ने चुनावी मैदान में उतरकर काफी चर्चा बटोरी। लेकिन चुनावी परिणामों ने स्पष्ट कर दिया कि केवल प्रचार से संगठन नहीं बनता। बूथ स्तर की कमजोरी, स्थानीय नेतृत्व की सीमित पहुंच और चुनाव के बाद संगठनात्मक सुस्ती ने पार्टी की रफ्तार धीमी कर दी। अब 2027 से पहले पार्टी फिर संगठन खड़ा करने की कोशिश कर रही है। हालांकि सबसे बड़ा सवाल यही है कि क्या आप उत्तराखंड की स्थानीय राजनीतिक संवेदनाओं के अनुरूप अपनी रणनीति तैयार कर पाएगी, या फिर राष्ट्रीय माडल पर ही निर्भर रहेगी?

राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि उत्तराखंड में तीसरे दल के लिए राजनीतिक स्थान पूरी तरह समाप्त नहीं हुआ है। बेरोजगारी, पलायन, भू-कानून, स्थानीय रोजगार, पर्वतीय विकास और क्षेत्रीय अस्मिता जैसे मुद्दे अब भी ऐसे हैं, जिन पर कोई वैकल्पिक राजनीतिक ताकत प्रभावी अभियान चला सकती है। लेकिन इसके लिए केवल मुद्दे उठाना पर्याप्त नहीं होगा। मजबूत संगठन, विश्वसनीय नेतृत्व, बूथ स्तर की सक्रियता और लगातार जनसंपर्क जरूरी होगा। समय-समय पर यह चर्चा भी होती रही है कि भाजपा और कांग्रेस के मुकाबले क्षेत्रीय और छोटे दलों के बीच किसी प्रकार का चुनावी तालमेल बन सकता है। हालांकि अभी तक यूकेडी और आप की ओर से ऐसा कोई औपचारिक संकेत सामने नहीं आया है।

यूकेडी और आप दोनों की निगाह युवा मतदाताओं पर है। रोजगार, पारदर्शिता, शिक्षा, उद्यमिता और स्थानीय अवसर जैसे मुद्दे युवाओं को प्रभावित कर सकते हैं। लेकिन युवा मतदाता केवल नारों से प्रभावित नहीं होता वह संगठन की विश्वसनीयता और नेतृत्व की क्षमता भी देखता है। 2027 का चुनाव यूकेडी और आप दोनों के लिए केवल सीटें जीतने का सवाल नहीं होगा, बल्कि राजनीतिक प्रासंगिकता बनाए रखने की परीक्षा भी होगा।

पुलिस मुठभेड़ में कुख्यात शार्प शूटर घायल

हमारे संवाददाता

उधमसिंहनगर। पुलिस मुठभेड़ में देर रात एक कुख्यात शार्प शूटर पुलिस की गोली लगने से घायल हो गया। जिसे उपचार हेतू अस्पताल ले जाया गया। मुठभेड़ के दौरान जहां पुलिस शार्प शूटर के दो साथियों को गिरफ्तार करने में कामयाब रही वहीं उनका एक साथी फरार होने में कामयाब रहा। पुलिस ने गिरफ्तार किये गये तीनों बदमाशों से तीन तमंचे, 10 कारतूस, तीन मोबाइल व एक कार बरामद की है। गिरफ्तार सभी आरोपी अपने विरोधी गैंग पर हमले की नियत से रूद्रपुर आये थे।

जानकारी के अनुसार बीती 21 जून को डिबडिबा, बिलासपुर, जनपद रामपुर के सक्रिय गैंग के शार्प शूटर जितेन्द्र चौधरी उर्फ विरत चौधरी द्वारा अपने प्रतिद्वन्द्वी की हत्या करने की नीयत से रुद्रपुर स्थित गाबा चौक पर बीच सड़क पर ताबड़तोड़ फायरिंग की गई थी। भरे बाजार में हुई उक्त दुस्साहसिक घटना से आमजन में भय एवं दहशत का माहौल उत्पन्न हो गया था। मामले में पुलिस ने कोतवाली रूद्रपुर में मुकदमा दर्ज कर जांच शुरू कर दी गयी।

पुलिस के अनुसार उक्त आरोपी द्वारा बीती 30 जून को अपने अन्य साथियों के साथ थाना पुलभट्टा क्षेत्र में पुनः अपने प्रतिद्वन्द्वी के वाहन को घेरकर कई राउंड फायरिंग की घटना को अंजाम दिया गया था, जिसमें राह चलती एक महिला सहित अन्य राहगीर गोली लगने से गंभीर रूप से घायल हो गए थे। संगीन अपराधों को अंजाम दे रहे उक्त गैंग के विरुद्ध त्वरित एवं प्रभावी कार्रवाई हेतु वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक ऊधमसिंह नगर, अजय गणपति के निर्देशानुसार पुलिस अधीक्षक नगर एवं क्षेत्राधिकारी नगर के

◆घायल बदमाश सहित तीन गिरफ्तार, एक फरार तलाश जारी
◆तीन तमंचे, 10 कारतूस, तीन मोबाइल व कार बरामद

पर्यवेक्षण में प्रभारी निरीक्षक कोतवाली रुद्रपुर के नेतृत्व में विशेष पुलिस टीम का गठन किया गया। पुलिस टीम द्वारा आरोपियों के संभावित ठिकानों पर लगातार दबिश दी जाने लगी। जिससे गैंग के सदस्य अपने-अपने घरों को छोड़कर फरार हो गए। मामले में बीती रात पुलिस को सूचना मिली कि फरार चल रहा शार्प शूटर जितेन्द्र चौधरी उर्फ विरत चौधरी अपने अन्य साथियों के साथ बिना नम्बर प्लेट की सफेद रंग की रेनॉल्ट क्विड कार में सवार होकर डिबडिबा क्षेत्र में अपने प्रतिद्वन्द्वी पर जानलेवा हमला करने की नीयत से जा रहा है तथा सभी आरोपी हथियारों से लैस हैं।

सूचना मिलते ही पुलिस टीम द्वारा जाफरपुर कट क्षेत्र में प्रभावी घेराबंदी कर दी गयी। जिसके कुछ समय पश्चात संदिग्ध वाहन दिखाई देने पर पुलिस टीम द्वारा वाहन को रोकने का प्रयास किया गया, किन्तु वाहन सवार आरोपी वाहन को तेज गति से भगाकर फरार होने लगे।

पुलिस टीम द्वारा पीछा किए जाने के दौरान उक्त वाहन यूनिटी लॉ कॉलेज के समीप कच्चे मार्ग पर मुड़ गया तथा अनियंत्रित होकर तारबाड़ से टकराकर रुक गया। वाहन रुकते ही उसमें सवार आरोपी खेतों एवं बाग की ओर भाग गए तथा पेड़ों की आड़ लेकर पुलिस टीम पर जान से मारने की नीयत से ताबड़तोड़ फायरिंग शुरू कर दी। पुलिस टीम द्वारा आरोपियों को बार-बार आत्मसमर्पण करने की चेतावनी दी गई, किन्तु आरोपी लगातार पुलिस टीम पर फायरिंग करते रहे। पुलिस बल एवं स्वयं के जीवन पर उत्पन्न तत्कालिक खतरे को देखते हुए तथा आत्मरक्षा एवं अपराधियों की गिरफ्तारी हेतु न्यूनतम बल प्रयोग के सिद्धांत का पालन करते हुए पुलिस टीम द्वारा जवाबी कार्रवाई की गई। मुठभेड़ के दौरान बदमाशों द्वारा पुलिस टीम पर लगभग आधा दर्जन राउंड फायरिंग की गई। पुलिस की जवाबी कार्रवाई में मुख्य शार्प शूटर जितेन्द्र चौधरी उर्फ विरत चौधरी के पैर में गोली लगी। मुठभेड़ के उपरांत पुलिस टीम द्वारा घायल आरोपी सहित दो अन्य आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया गया, जबकि एक अन्य आरोपी निरंजन टाकुली उर्फ नीरू टाकुली अंधेरे का लाभ उठाकर मौके से फरार हो गया, जिसकी गिरफ्तारी हेतु पुलिस टीम द्वारा लगातार दबिश एवं कॉबिंग की कार्रवाई की जा रही है। घायल आरोपी को तत्काल उपचार हेतु जिला चिकित्सालय रुद्रपुर में भर्ती कराया गया, जहां उसका उपचार जारी है।

अज्ञात वाहन की चपेट में आकर ई-रिक्शा चालक सहित दो घायल

संवाददाता

देहरादून। अज्ञात वाहन की चपेट में आकर ई-रिक्शा चालक सहित दो लोग घायल हो गये। पुलिस ने मुकदमा दर्ज कर जांच शुरू कर दी।

प्राप्त जानकारी के अनुसार आजाद कालोनी माजरा निवासी नशीम ने पटेलनगर कोतवाली में मुकदमा दर्ज कराते हुए बताया कि उसका बेटा अपनी ई-रिक्शा से घर की तरफ आ रहा था जब वह सुभाषनगर पहुंचा तभी अज्ञात वाहन ने ई-रिक्शा को टक्कर मार दी। जिससे उसको बेटा व उसका दोस्त असलम गम्भीर रूप से घायल हो गये और अज्ञात वाहन चालक मौके से फरार हो गया। पुलिस ने मुकदमा दर्ज कर जांच शुरू कर दी।

फॉरेस्ट में ऑल टूरिस्ट साइट्स के लिए बुकिंग व्यवस्था ऑनलाईन की जाए: मुख्य सचिव

संवाददाता

देहरादून। मुख्य सचिव आनन्द बर्द्धन ने फॉरेस्ट के अंतर्गत सभी माउंटेनियरिंग, ट्रैकिंग, टूरिस्ट साईट्स एवं वन विश्राम गृहों आदि की सभी प्रकार की बुकिंग्स को ऑनलाईन मोड पर किए जाने के निर्देश भी दिए।

आज यहां मुख्य सचिव आनन्द बर्द्धन ने सोमवार को सचिवालय में प्रदेश के अंतर्गत इको-टूरिज्म गतिविधियों को बढ़ाए जाने को लेकर वन विभाग के अधिकारियों के साथ बैठक की। बैठक के दौरान सर्वप्रथम मुख्य सचिव ने इस सम्बन्ध में पिछली बैठक में दिए गए दिशा-निर्देशों के अनुपालन की प्रगति की जानकारी ली। उन्होंने कहा कि उत्तराखण्ड में इको-टूरिज्म के लिए अत्यधिक सम्भावनाएं हैं। इसे प्रदेश और

प्रदेश के नागरिकों की आर्थिकी से जोड़े जाने की आवश्यकता है, ताकि बिना प्रकृति को नुकसान पहुंचाए हम वनों को आजीविका से जुड़ी गतिविधियों से जोड़ सकें। मुख्य सचिव ने प्रदेश में ट्रैकिंग पॉलिसी तैयार कर शीघ्र लागू किए जाने के निर्देश दिए हैं। उन्होंने विभाग को ट्रैकिंग पॉलिसी अगस्त माह तक कैबिनेट में प्रस्तुत किए जाने का लक्ष्य दिया। कहा कि प्रदेश में ट्रैकिंग के लिए नई चोटियों को भी खोला जाए। इसके लिए सभी आवश्यक अनुमतियों एवं मंजूरियों की प्रक्रिया को तत्काल शुरू किया जाए। उन्होंने उत्तराखण्ड प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड को चिन्हित चोटियों का ऑडिट कार्य में तेजी लाते हुए शीघ्र रिपोर्ट प्रस्तुत किए जाने के निर्देश दिए। मुख्य सचिव ने फॉरेस्ट के अंतर्गत सभी माउंटेनियरिंग, ट्रैकिंग, टूरिस्ट साईट्स एवं वन विश्राम गृहों आदि की सभी प्रकार की बुकिंग्स को ऑनलाईन मोड पर किए जाने के निर्देश भी दिए। कहा कि इससे क्षमता से अधिक बुकिंग को रोका जा सकेगा। उन्होंने जबरखेत मॉडल के अनुरूप विकसित की जाने वाली 9 साईट्स को अक्टूबर माह तक लोकार्पित किए जाने के निर्देश दिए। मुख्य सचिव ने प्रदेश में फॉर्मल नेचर गाईड ट्रेनिंग की व्यवस्था शुरू किए जाने की भी बात कही। कहा कि प्रदेश में इसके लिए स्थायी ट्रेनिंग सेंटर और पाठ्यक्रम निधारित किया जाए। उन्होंने इसके लिए भारत सरकार द्वारा संचालित पाठ्यक्रम के साथ ही कुछ अतिरिक्त पाठ्यक्रम जोड़ते हुए सर्टिफिकेशन कोर्स शीघ्र शुरू किए जाने के निर्देश दिए। उन्होंने अक्टूबर में वाईल्ड लाईफ के वीक के अवसर पर इसे शुरू किए जाने का लक्ष्य दिया।

बैंकॉक के पब में भीषण आग लगने से 27 की मौत, 60 से ज्यादा घायल

संवाददाता

बैंकॉक। थाईलैंड की राजधानी बैंकॉक में एक पॉपुलर पब रोंग बीयर ना लाट फ्राओ में रविवार की देर रात भीषण आग लग गई। इस दुर्घटना में कम से कम 27 लोगों की मौत हो गई और 63 अन्य लोग घायल हो गए घायलों में 22 लोगों की हालत गंभीर बताई जा रही है।

शुरुआती जांच में एसी में शॉर्ट सर्किट और बंद इमरजेंसी एग्जिट को हादसे की बड़ी वजह माना जा रहा है। घायलों में कई की हालत गंभीर है, जिनका विभिन्न अस्पतालों में इलाज जारी है। घटना के बाद पूरे इलाके में अफरा-तफरी मच गई और राहत एवं बचाव दल ने घंटों तक अभियान चलाकर लोगों को बाहर

निकाला।

प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसारए हादसे के समय बार के अंदर बड़ी संख्या में लोग पार्टी कर रहे थे। अचानक आग लगने के बाद कुछ ही मिनटों में धुआं पूरे परिसर में फैल गयाए जिससे लोगों में भगदड़ मच गई। कई लोग मुख्य निकास द्वार की ओर भागे जबकि कुछ ने जान बचाने के लिए टॉयलेट और अन्य कमरों में शरण ली। हालांकि धुएं के कारण कई लोग बाहर नहीं निकल सके।

हादसे के बाद थाईलैंड सरकार ने घटना पर गहरा दुख जताया है और निष्पक्ष जांच के आदेश दिए हैं। अधिकारियों ने कहा कि यदि सुरक्षा मानकों में किसी तरह की लापरवाही सामने आती है तो जिम्मेदार लोगों के खिलाफ कड़ी कानूनी कार्रवाई की जाएगी।

फिलहाल राहत और बचाव कार्य पूरा कर लिया गया हैए जबकि पुलिस और संबंधित एजेंसियां मामले की विस्तृत जांच में जुटी हुई हैं। प्रशासन ने लोगों से अफवाहों से बचने और केवल आधिकारिक जानकारी पर भरोसा करने की अपील की है।

आर.एन.आई.- 59626/94

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक श्रीमती पुष्पा कांति कुमार द्वारा दिग्विजय सिनेमा बिल्डिंग घंटाघर, देहरादून से प्रकाशित तथा अवि प्रिंटर्स 21 ईसी रोड, देहरादून से मुद्रित।

प्रधान संपादक
कांति कुमार

संपादक
पुष्पा कांति कुमार

समाचार संपादक
आनंद कांति कुमार

कानूनी सलाहकार:
वी के अरोड़ा, *एडवोकेट*
बैजनाथ, *एडवोकेट*

कार्यालय: दिग्विजय सिनेमा बिल्डिंग देहरादून।
मो. 9358134808

नोट: सभी विवादों के लिये देहरादून न्यायालय ही मान्य होगा, प्रकाशित सामग्री के लिए प्रिंटर्स की कोई जिम्मेदारी नहीं होगी।